সংক্ষিপ্ত সংলপ - ১ (কলিগ)

: আজই শেষ দিন?
: হুমম
: কোথায়?
: এখনো কোথাও না
: তাহলে কেন?
: জানিনা
: মোবাইল?
: জমা
: অফিসের ছিল?
: হুমম
: পার্সোনাল?
: নেই
: বেশী কষ্ট?
: হুমম
: কারণটা জানি?
: হুমম
: সিগারেট বেড়েছে?
: হুমম, জানতেন?
: আন্দাজ
: ঝগড়া মিটেছে?
: হুমম, জানতেন?
: আন্দাজ
: আর দেখা হবে?
: যেন না হয়।
১২- ৯- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ২ (দু'জনই দু'জনার)

: হিংসা হচ্ছে?
: হুমম
: আমাকে সন্দেহ?
: কখনো কি করেছি?
: না, এখন?
: না, ভবিষ্যতেও না
: তবু হিংসা?
: হুমম
: পাগল একটা, বাচ্চা একটা!
: অমন সুন্দর করে কেন বকো?
: ভালবাসি বলে, তুমি?
: হিংসা করি এরে তারে
: ভালবাসো বলে?
: হুমম
: হারানোর ভয়?
: হুমম
: তোমাকে ছাড়া বাঁচবো! জানোনা?
: জানি
: তবু হিংসা!
: হুমম
: হি হি হি.. পাগল একটা, বাচ্চা একটা।
১৩- ০৯- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৩ (সে ও তার বিড়াল)

: ছেড়ে যাচ্ছি সব
: মিয়াও
: সঙ্গী হবি অনিশ্চৎ ভবিষ্যতে
:
: তুই কি আর বলবি, নিজেইতো আমি সিদ্ধান্তহীন
:
: ওর হাতে দিয়ে যাবো তোরে, থাকবি?
: মিয়াও..ওও
: এইতো খুশি হয়েছিস্
: ওমম ও..
: আমার নিরুদ্দেশে সে যে তোরে দেখে এ আমি বুঝি!
:
: চুপ কেন? যাই হোক, এবার একেবারেই যাবো
: ইয়োও..
: একেবারেই সপে যাবো তোরে
:
: তোর ভাগ্য ভালো, কেন যে বিড়াল হয়ে জন্মালামনা!
: মিয়াও...
১৩- ০৯- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৪ (ট্রেনে)

: চিটগং?
: (চুপ)
: আমি শুন্য, আপনি?
: (ফিক্ করে হেসে) পরিপূর্ণা
: বাবা গণিতের, তাই এই নাম
: আমি যুথী, বাবা উদ্ভিদ প্রেমী নন
: চিটগং?
: হুমম
: একা যে!
: অভ্যেস আছে
: ডাক্তার?
: হইনি এখনো
: খুব শখ ছিলো
: হলোনা কেন?
: চান্স পাইনি
: হি হি হি, কি হলেন?
: কিচ্ছুনা, দেশে?
: হুমম মা'কে দেখতে
: মা নেই, বাবা তারও আগে
: আহারে সরি
: ইটস ওকে, মেনে নিয়েছ
: আর কে কে?
: আমার সাথে আমি, হা হা হা
: চিটগং?
: না, মাঝ পথে
: দেশ?
: না, কিচ্ছু না
: তবে?
: ঐ থামলো ট্রেন, যাই?
: ভালো লাগলো
: আমারও কি নয়?
১৪- ০৯- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৫ (অনেক বছর পর)

: এখানে কোথায়!
: কোথাওনা
: আড়াল করছো?
: করেছি কখনো?
: হাহ্ ! সরাটা জীবন
: (চুপ)
: শরীরের এ কী হাল!
: ভাল আছি
: সে তুমি সর্বদাই থাকো
: (চুপ)
: আর কত অবহেলা নিজের প্রতি!
: (চুপ)
: বাবা?
: দশ বছর হলো
: মা?
: গত বছর
: হাহ্. তোমার পথ সুগম হলো
: (চুপ)
: পিঠ ব্যাথাটা সেরেছে?
: হুমম
: কখনো পাড়না, তবু কেন মিথ্যা বলো!
: (চুপ)
: কপাল কেটেছে কিভাবে?
: অন্যমনষ্কে
: (দীর্ঘশ্বাস)
: কোন ঠিকানা আছে?
: না
: জানতাম
: আমার চেয়ে বেশী ভালো কেউ বেসেছে?
`: না
: তবু আমাকেই এত কষ্ট দিচ্ছো?
: (চুপ)
: আমাকে দরকার নেই, নিজেকেতো ভালোবাসে!

: (চুপ)
: এরচেয়ে বেশী কিছু চেয়েছিলাম?
: যাই?
: যাও, এই একটা কাজেই তুমি সফল
: ভালো থোকো
: নিজেকে যেমন রাখবে, আমি তেমনই থাকবো
: যাই তাহলে?
: যেওনা বল্লেকি থাকবে?
: (চুপ)
১৪- ০৯- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৬ (আমার সাথে আমি)

: কে তুমি?
: সুখীমানুষ
: মিথ্যে কথা
: না
: জোড় দিয়ে বলছো?
: হ্যা
: চাওনা?
: চাই
: সব পাও?
: না
: তবু সুখী?
: হ্যাঁ, কেননা মেনে নেই
: সুখের অভিনয়?
: না
: দুঃখ তোমাকে ছুঁয়না?
: ছুঁয়, কিন্তু আটকে থাকেনা
: কাঁদো?
: হ্যাঁ, এতে দুঃখ ধুয়ে যায়
: ভালোবাসো?
: হ্যাঁ
: তোমাকে কেউ বাসে?
: হিসাব রাখিনা
: শূন্য হয় যদি এই ভয়?
: না
: তবে?
: সুখীমানুষরা শুধু ভালোবেসে যায়
১৪- ৯- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৭ (বৃথা)

: মরতে চাও?
: না
: স্বপ্ন?
: নেই
: কারো দায়িত্ব?
: নিতে হয়না
: তুমি বিশেষ কেউ?
: কারো কাছেই না
: বিত্ত?
: নেই
: কবি?
: না
: প্রকৃতিপ্রেমী?
: না
: কাজে অমর হতে পারবে?
: এমন কিছু পারিনা
: তুমি মরলে কেউ কাঁদবে?
: মা ছাড়া কেউনা
: ভালোবাসো?
: (চুপ)
: তবে কেন বেঁচে আছো?
: আশায়...
১৫- ০৯- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত কথন - ৮ (যোগ্যে অযোগ্য)

: খেলবে?
: তুমি- আমি?
: তো?
: আমি বুদ্ধিপ্রতিবন্ধী
: বুদ্ধু, জানি
: তবু কেন এ আহ্বান!
: তোমায় ভরসা আছে বলে
: আমি করেনাকো ফোসফাস টাইপ বলে?
: হি হি হি হুমম
: বলনা, খেলবে?
: না বলতে পারি তোমায়! জাননা?
: শুরু করো
: কী?
: ও.. এ খেলা শব্দের পিঠে শব্দ
: (চুপ)
: যে কোন শব্দ বলো

: তুমি
: হি হি হি বুদ্ধি

: আমি
: বুদ্ধু

: নদী
: সম্পান, (এইতো পারছো!)

: ফুল
: বসন্ত

: মন
: মানেনা

: আকাশ
: সুর্য্যাস্ত

: লতা
: কিশোর

: চাওয়া
: হতাশ

: রাত
: সে

: চাঁদ
: মরণ

: কবি
: ব্যার্থ

: বৃষ্টি
: উদাশ

: ভালোবাসা
: (চুপ)
১৫- ০৯- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৯ (ফোনে ফোনে কাছে)

: হ্যালো
: হুমম
: চা?
: খাচ্ছো?
: একলা খাই কখনো!
: কখন খাবে?
: তোমারও সুযোগ হলে
: সারাদিন কিছু খাওনি
: সময় হয়নি, তুমিওতো না!
: একলা খাই কখনো!
: চা আনবো?
: আনো
: চা সামনে আমার, তোমার?
: আটকে গেছি ঝড়ে
: রাস্তায়!
: না অচেনা বারান্দায়
: কেন বের হলে?
: এক সাথে খাবো বলে
: কেন পাগলামী করো?
: তুমি পাগল পছন্দ করো বলে
: পাগল
: আরো কয়েকবার বলোনা
: আমি কাঁদবো

: কেন?
: কেন এত ভালোবাসে? কেন এত ভালোবাসি!
: চা টা তো খাও
: একলা খাই কখনো?
: চোখের জলে চা বাড়ছে
: ফেলে দিয়েছি কখন!
: ঢাকায় আজ বৃষ্টি নেই?
: ঝলমলে রোদ, কবে আসবে?
: কত দিন দেখিনা!
: এত কাজ কেন করো?
: সুখে রাখবো বলে
: তুমি আছো, এরচেয়ে বেশী সুখও আছে? সম্ভব!
১৬- ০৯- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ১০ (অনধিকার চর্চা)

: কে?
: ভক্ত
: কবে থেকে?
: যেদিন আগ্রহ ভরে দেখেছি
: কেন?
: ও চোখে জল দেখে
: সাহারা?
: না, সান্ত্বনা
: ভক্ত হবার কারণ?
: ঐ সরল দু'টি শাদা স্বচ্ছ চোখ
: আর?
: ঐ বুদ্ধিদীপ্ত চেহারা
: আর?
: ব্যাক্তিত্ব
: আর?
: চটুল মিশুক স্বভাব
: আর?
: স্মৃতি শক্তি
: আর?
: মেধা
: আরো আছে?
: কোন দিন শেষ হবে!
: প্রশংসা যে চাইনা
: কেন?
: প্রশংসা করার লোক আছে বলে
: তো?
: তার চেয়ে বেশী কেউ প্রশংসা করুক তা চাইনা বলে!
১৯- ০৯- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ১১ (অশ্রুর আড়ালে)

: কি এ?
: দৃশ্যত পানি
: অদৃশ্যে?
: কেবলই অশ্রু নয়
: তাহলে?
: বুঝানো দায়
: কেন?
: অশ্রুতে অশ্রুতে পার্থক্য প্রবল
: এখন?
: কষ্টের মোড়কে বাধা জল
: কি কষ্ট?
: বুঝানো দায়
: লোকাচ্ছো?
: খোদ নিজের কাছেও
২০- ৯- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ১২ (অপরিচিত ফোনে)

: হ্যালো
: কে?
: সাহেদ
: চিনি?
: কথা না
: কি চাই?
: স্কোর কত?
: মানে!
: ভারত- পাকিস্তান
: মানে কি?
: খেলা, টিভিতে
: অদ্ভুত!
: বিদ্যুৎ চলে গেল তাই
: তাই বলে আপরিচিত নাম্বারে?
: ইচ্ছে হলো
: মা ডাকছেন, ধরুন
: স্কোর!
: মনে আছে
: ওকে
: হুমম.. ব্যাক
: স্কোর?
: ১৪৩ বাই ২
: থাংকু, রাখি?
: না
: হা হা হা কেন!
: অন্যরকম আইডিয়া
: আমি এমনই
: নাম?
: বলেছিতো
: হুমম সাহেদ, আমারটা?
: বলেননি
: জিজ্ঞাসা করেছেন?
: প্রয়োজন নেই
: নাম্বার মনে আছে?
: না
: রিডায়েল?
: ডিসপ্লে নেই
: জানতে চাননা?
: না
: আপনার?
: জানিনা
: মানে?
: এক পরিচিতর বাসায়
: আর কথা হবেনা?
: কি দরকার, থাংকু
: (চুপ)
২১- ৯- ০৮, প্রেমবাগান, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ১৩ (বেকার ও পথের...)

: স্যার কিছু অইলো?
: নাহ
: অইবোনা
: কিভাবে বলো!
: দরকার বেশী অইলে চাকরী অয়না
: (চুপ)
: হইলে ভালো না হইলে আরো ভালো ভাব লন
: (দীর্ঘশ্বাস) হুমম..
: তাইলে চাকরী নিশ্চিৎ
: ভালো কইছো..
: হ, আইজ আমদানি ভাল
: হুমম...
: দুই'শ পার অইছে
: বাসায় চলে যাও
: টার্গেট তিনশ পঞ্চাশ
: এত?
: হ ঈদের বাজার
: যাই?
: না খাওয়াইয়া ছাড়মু?
: আরএক দিন
: বেকার, তবু প্রায়ই দেন
: তাতে কি?
: আমার তো বানিজ্য অয়
: (চুপ)
: দুঃখ অয় স্যার
: কেন?
: শিক্ষিতের বেতন আমার বানিজ্যখন কম!
: হুমম
: আর আপনার চাকরী অয়না? ইডি দুনিয়া!
: যাই আজ?

: অন্ধের অনুরোধ ফিরাইছেন কোনদিন/
: না
: তবে আইজ যাই যাই করেন কেন?
: মনটা ভালো নাই
: বলা আছে, ঐখানে খাইয়া আসেন
: কেন এত ভালোবাসো?
: বাসিনাতো? ফেরত দেই!
২১- ০৯- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ১৪ (সুখীমানুষ ও অসুখীমানুষ)

: কে?
: সুখীমানুষ
: ভান
: হ্যা
: তবে!
: ভান'টাই বিশ্বাস
: জোর করে?
: না
: তবে?
: অনুভব করে
: সুখ ক্ষনস্থায়ী
: ঐটুকুই জমা রাখি
: দুঃখ নিত্যসঙ্গী
: ফেলে দেই
: কিভাবে?
: ভান করে
: দুঃখের ভারে ক্লান্ত
: এ দৃষ্টিভঙ্গি
: আসলে ক্লান্ত নই!
: হ্যাঁ হয়ত
: হয়ত কেন?
: দুঃখ অনুভব করতে হয়
: কেমন করে?
: সুখের মত
: সম্ভব?
: দৃষ্টিভঙ্গী বদলালে
: হাস্যকর
: হ্যা, তুমি
: আমি! কিভাবে?
: সুখ পাওনি?
: পেয়েছি, টিকেনি
: কোনকিছুই টিকেনা
: মনে স্মৃতি জ্বালায়
: তার উত্তাপ নাও
: কেউ থাকেনি
: কেউ তোমার ছিলোনা
: এ দুঃখ নয়?
: না এ মুক্তি
: জীবন বড় শ্রান্তিময়
: তবেই অবসরের আনন্দ পাবে
: ক্ষনস্থায়ী
: একেই স্থায়ি করে জমা রাখো
: আমি অসুখী
: বন্ধু আছে?
: হ্যাঁ
: তুমি কারো বন্ধু?
: হ্যাঁ
: আকাশ দেখতে পাও
: হ্যাঁ
: ঘাসে পা রাখো?
: হ্যাঁ
: বুক ভরে শ্বার নাও
: হ্যাঁ
: নিষ্ঠুর হতে পারো?
: না
: দুঃখী'র দুঃখ দুঃখী করে?
: হ্যাঁ
: ভালোবাসতে জানো?
: খুব
: নিজে তুমি ভালো মানুষ?
: বুকে হাত দিয়ে
: এখন কি মনে হচ্ছে?
: আমিও সুখীমানুষ
: একে স্থায়ী করো।
২৩- ০৯- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ১৫ (ব্রেকআপ)

: (চুপ)
: (চুপ)
: শুরু করো
: শুরু না শেষ?
: যা আছে মনে
: তোমার নেই?
: আছে
: বলো
: তুমি ডেকেছো
: তবে তাই হোক
: (চুপ)
: আজ হতে আমি কেউনা
: সন্দেহ?
: অবিশ্বাসও
: সত্যটা জানবেনা?
: আড়াল করেছো অনেক
: কিছুটা আড়াল রাখতে হয়
: কেন?
: নগ্ন দৃষ্টি ভয়ংকর বলে
: সব জানতে চেয়েছিলাম
: সম্পর্ক আরো খারাপ হতো
: এখন ভালো?
: ভাবিনি বিশ্বাস হারাবে
: আমিওনা
: স্বাই হতে কেন গেলে?
: সন্দেহ বলে
: তবে দূরে যাওয়াই ভালো
: (চুপ)
: যেখানে বিশ্বাস নেই, ভালবাসা সেখানে বন্দী
: আজ হতেই তবে
: হ্যাঁ
২৪- ০৯- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ১৬ (হয়ত ভুল করেই)

: !
: ?
: নজু?
: না!
: অ অউ..
: :) ঠিক আছে
: নজু'র মত'ই কিন্তু!
: পঞ্চম
: পপি
: বাহ্ প দিয়ে!
: চারুকলা, ৩য় বর্ষ
: বাঁশিওয়ালা
: !
: :) হুমম, সত্যি
: নেশা নাকি পেশা?
: দুইই
: হবি?
: হারিয়ে যাওয়া
: চিমটি
: আপনিও!
: মনেমনে
: রং তুলি পূজা করি
: ছবি আঁকেন?
: না, তবে সমঝদার
: মুগ্ধ হচ্ছি
: আর হতে পারবেননা
: কেন?
: আর কিছু জানিনাযে?
: প্রায়ই আসেন?
: হারিয়ে যখন যাই
: :) এখন হারিয়ে যাওয়ায়?
: হুমম.
: আবার কবে?
: জানিনা
: ওমা, আগ্রহ?
: আমি এমনই!

২৭- ০৯- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ১৭ (শতেক সতীন)

: গান সতীন আমার!
: কি করে?
: ভালো যে বাসো!
: হা হা হা
: হাসবেনা, আরো আছে
: বলো তবে (মুচকি হাসি)
: বাঁশী
: ভালোবাসি বলে??
: ঠুটেওযে ধরে রাখো!
: আর?
: বই
: এ ও?
: হবেনা! হাত থেকে নামাও!!
: আর কি কি? (আগ্রহ)
: ল্যাপটপ
: এ তো জীবিকা!
: তাই বলে সারাদিন!
: শেষ?
: ওঁনঁ... বারান্দাটাও
: এ ও সতীন?
: তবে! উদাস হয়ে দাড়াওনা?
: এবার কিন্তু শেষ!
: বড়টা ই তো বলিনি?
: সতীন বড় ও আছে?
: হুমম.. (ঢং করে)
: কে সে!
: সিগারেট
: সে ত ছেড়ে দিয়েছি!
: যখন ঝগড়া লাগো?
: সে তো কষ্ট দিতে
: ভালোবাসলে কষ্ট দেয়?
: ভালোতো বাসিনা!
: তবে?
: সপে দিয়েছি
: সে আর জানিনা?
: তবু অভিযোগ কেন?
: আমিওযে ভালোবাসিনা তাই! হি হি হি
২৯- ০৯- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ১৮ (আপনমনে)

: নখগুলো বড় হয়ে গেছে :(
: কেটে ফেলো
: না, সে কেটে দেয়
: সেতো মান করে দূরে
: সপ্তাহ পার হয়ে গেল
: তারপরেও যোগাযোগ করেনি
: আমিওতো না!
: নিজের নখ নিজে কাটো
: সে তো হাত ধরে সবসময়...
: থামো, বেশী নির্ভরশীল হয়োনা
: সে রাগ করবে
: সে জানেনা নখ বড় হয়েছে?
: তারওতো নখ বড় হয়েছে
: দেখো কেটে ফেলেছে হয়ত
: জীবনেও না
: এতই বিশ্বাস?
: হ্যাঁ
: তবে নিজে যোগাযোগ করো
: না, কেন সে ভুল বুঝলো?
: তুমি কেন ভুল ভাঙ্গাচ্ছোনা?
: বারবার ভাঙ্গিয়েছি
: আবার ভুল করে?
: হ্যাঁ
: ভুলটা হয় মেনে নাও নহয় দূরে সরে যাও
: তাকে ছাড়া জীবন !
: তুমি ছাড়া তারওকি জীবন?
: জানিনা
: বিশ্বাস নেই?
: আছে, ভরসা নেই
: ভালোবাসাটা আসলেই জটিল
: হুমম আসলেই!
২৯- ০৯- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ১৯ (মধুর)

: হ্যালো
: (চুপ)
: বউটা কি রাগ?
: হবেনা?
: বউটা কি করছে?
: জামাইটা'র উপর রাগ
: জামাইটা'র কি দোষ?
: দিনটাতো প্রায় শেষ!
: তো?
: মাত্র পাঁচ বার ফোন?
: সাত শ একাশি বার মনে পড়েছে
: সত্যি! (খুশি)
: কিছুটা
: মনে পড়ে নাই? :(
: সত্যটা হলো, হাজারেরও বেশী
: তবে কাজ তো চুলায়! হি হি হি
: আর বলতে! (ঢং)
: কাজে মন দাও
: বউটাতো তা দেয়না!
: বউ টা কি করে?
: হৃদয় শুকায়ে দেয় (মন খারাপ)
: শুষ্ক হৃদয়ই শুভ
: কেন?
: সতীনরা সব পিপাসায় মরবে
: সতীনও আছে?
: অমন জামাইটায় লোভ শত সতীনের!
: আর আমার সতা নেই?
: আছে কি! (আশ্চর্য), নিজেইতো জানিনা!
: গাছের পাখীটাও আমার সতা (ঢং)
: কেন গো? (ঢং এর উপর ঢং)
: ওযে মুগ্ধ হয়ে তাকায় তোমার দিকে!
: হি হি হি
: ভয় হয়
: কিসের?
: বুঝিবা হারিয়ে যাবে
: আমার বুঝি হয়না?
: কেন হয়?
: বুদ্ধু, এর নামই যে ভালোবাসা ! হি হি হি...
২৯- ০৯- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ২০ (ফুল ফুলে)

: এ্যই এ্যইই..
: কি হলো!
: ঢলে এসে গায়ে লাগলেযে!
: বাতাসে দিলো হিল্লোল
: তাই বলে ঠোঁটে ঠোঁট!
: সুযোগটাও তো এলো। হা হা হা
: দস্যি

: কি হলো, শুকনো কেন পাপড়ি দল?
: মরার পাখীটা ফের নিয়ে গেল মধু
: এত আগলে রাখি তবু!
: কেন দূরে সরে গিয়েছিলে (অভিমান)
: বাতাসের ষড়যন্ত্রনায় (আক্ষেপ)

: একি একি এ কি হলো?
: ভ্রমর এসে দিয়ে গেল নাড়া
: তাই বলে টুটাবে বাধন লাজের?
: কুড়িদলে বল্লো ভাঙ্গাতে ঘুম।
(পরাগায়ণ গেল হয়ে ;))
৩০- ০৯- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ২১ (আড়ি আড়াল ঈদে)

: সপ্তী
: (চুপ)
: কুত্তা! এই..
: ঢং করবানা

: কেন গো?
: আড়ি না দিলে?
: তুমিইতো ভাঙ্গলে!
: আমি!
: তবে?
: কখনোই না
: কখনোই হ্যাঁ
: কিভাবে?
: কথা কি ছিলো?
: সামনে যাবোনা জীবনেও
: তবে এলে যে!
: আমি? কখন!
: এইতো পশ্চিম আকাশে
: ওতো ঈদ এর চাঁদ!
: গরু, সরি গাভী
: বকো কেন গাধা?
: এ কি চাঁদ! এতো তুমি?
: ও আচ্ছা !! (ঢং)
: হ্যাঁ নিজেইতো সামনে এলে?
: চাঁদের সাথে কেউ ঝগড়া করে?
: চাঁদের সাথে সব কিছুই করা যায়
: বুঝ তাহলে?
: হুমম
: চাঁদের দিকে সবাই চেয়ে আছে!
: চাঁদটা আমার, আমি জানি
: চাঁদটাও জানে সে কেবলই তোমার!
: নাটাই শক্ত করে বাধা, তাই টানাটানি
: জানি। হুঁ হুঁ হুঁ...
১- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ২২ (আজ কি ঈদ!)

: ঈদ মোবারক
: আজ কি ঈদ?
: হ্যাঁ তো!
: তবে আপনাকেও
: চেহারায় ঈদ কই!
: সে বয়স গেছে
: কথা তা নয়
: হুমম (চুপ)
: চেহারায় ঈদ কই?
: ব্যাস্ততা
: কথা তা নয়
: হুমম (দীর্ঘ শ্বাস)
: চেহারায় ঈদ কই? (শংকা)
: সুখীমানুষদের প্রতিদিনই ঈদ
: কথা তা নয়
: হুমম (কথা হাতরাচ্ছে)
: জানতে চাচ্ছি
: ঢাকছি
: বুঝা যায়
: কেন তবে জোর করে!
: করতে নেই?
: সুখীমানুষকে কেউ জোর করেনা
: এই জন্য দুঃখ
: লাভ কি?
: হুমম (মন খারাপ)
: যাই
: ভাববেননা, সুখীমানুষরা সুখেই থাকে।
: হুমম (উপায় নেই, সান্ত্বনার ভাষাও নেই)
১- ১০- ০৮, ঢাকা (রমজানের ঈদ)

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ২৩ (ভালোবাসিনা আর!)

: হাতে প্রাণ নেই যে! (অভিযোগ)
: থাকে কি?
: ছিলো তো
: কি জানি (ভাবলেশহীন)
: উচ্ছলতাও নেই
: আমি এমনই (উদাস)
: এমনতো ছিলেনা! (আক্ষেপ)
: হয়ত তুমিই বানিয়েছ
: কিভাবে!
: সন্দেহ ও ভালোবাসায় ঘিরে
: ভালোবাসা ও সন্দেহ সহোদর
: বলয় করে ঘিরে ফেলে
: বলয় চাওনা?
: বড্ড বন্দী লাগে
: ভালোবাসা তবে কি?
: খোলা আকাশে দু'টি পাখী পাশাপাশি
: এখন?
: খাঁচা নয়, চিড়িয়াখানায় বন্দী
: অভিযোগ করছো
: শুনে তুমি অভ্যস্ত নও
: তবে?
: করেই অভ্যস্ত তুমি
: আজ করছো যে!
: মনে হচ্ছে আর পারছিনা
: ভালোবাসোনা?
: অনেক
: আকাশে উড়তে চাওনা?
: পেলাম কই? চিড়িয়াখানায় বন্দী
: পথ চলতে চাওনা?
: কম্প্রমাইজ করে করে ক্লান্ত
: কি বলছো বুঝো?
: হ্যাঁ, আমি মুক্ত হতে চাই, আজাদ
: চাইলেই পারবে?
: আটকাবে?
: তবে?
: এও ভুল করছো
: এর মানে কি?
: ভালোবাসলে ছেড়ে দিতে হয়
: হারিয়ে যাবার ভয় থাকে
: পাখীরা আকাশে পায়ে পায়ে বাধা থাকেনা!
: আমরা পাখী নই
: আমি পাখী হতে চাই, মুক্ত আকাশ চাই
: পাবে?
: খুঁজে দেখি, যাই?
: (চুপ)
: ভালো থেকো।
১- ১০- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ২৪ (প্রপোজ)

: দিতে চাই
: আচ্ছা আচ্ছা (দুষ্টমি ও ঢং)
: জীবনের সমস্ত সত্যি দিয়ে
: শুনিতো আগে!
: নতুন জীবন
: না দিতে পারলে লাত্থি খাইতে রাজি?
: দেহে ও মনে।
: আজ হতেই তবে শুরু করে দাও
: কি?
: আমার নতুন জীবন গড়া।
: রাজি তবে! (জন্মের খুশি)
: হুমম..পটে গেলাম তো! (সরল সহজ হাসি)
: এই নাও
: কি এ!
: একটা আকাশ
: ওমা! এতবড় আকাশ! কি করবো?
: সাজাও নিজের মত করে
: কি দিয়ে?
: অন্ধকার ব্যাকগ্রাউন্ড দিতে পারো
: আর?
: কামারের জ্বলন্ত লোহার রং এর চাঁদ
: তারা থাকবে?
: তোমার আকাশ, সাজাও তোমার মত
: আহা বলোনা, তারা দিবো?
: দাও, তবে কম আলোয়
: কেন?
: ওমা! চাঁদ আছে যে!
: হুম তাইতো! খেয়ালই নেই! (ঢং)
: এ আমাদের দু'জনের বুদ্ধির সংসার
: আমি কিছু দিবোনা?
: বাধ্য নও, তোমাকে রাখবো স্বেচ্ছাচারী
: এ ভালো লাগবে?

: সব ভালো লাগে বলেইতো সপে দিলাম!
: সপে নিলেনা?
: না
: কেন গো! (কপট মন খারাপ)
: বাধা পড়লাম, বাধলামনা
: কেন?
: আমি এমনই।
: আমি এমনই, বুদ্ধু! (ঢং করে বকা)
২- ১০- ০৮, ঢাকা (আজ রমজানের ঈদ)

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ২৫ (কেউনা, কেউ কি?)

: কে! কে ডাকলো পিছু?
: কেউ নাতো!
: ও :(
: পথের লতা কি আটকালো পা?
: না তো
: ও ও ... (দীর্ঘশ্বাস)
: থামলে কেন? কি ভাবছো!
: শরিষা ফুল ফুটেছে?
: এখনো সময় হয়নি
: ও ভাবলাম বুঝিবা..
: তুমি ভেঙ্গে পড়ছো
: এতে কারো কিছু যায় আসেনা
: তুমি এমন কেউনা
: হুমম জানি, এমন কেন হয়?
: জানিনা, তবে তুমি কারো কেউনা
: হুমম
: কি হলো, কি দেখছো পিছন ফিরে?
: পথের শেষ মাথায় কি কেউ?
: তোমার কেউ না
: তবু ডাকলো কি আমায়?
: না, কেন ডাকবে?
: হুমম..সেই তো :(কেনইবা ডাকবে
: কেন এত ফিরে ফিরে চাও?
: ফেরত পাই কিনা দেখি
: কি?
: ভালোবাসা
: ফেরত পাবার আশা করেছিলে?
: শুধু বেসেই গেলাম, কিছুটা পাবোনা?
: না, সবাই ভালোবাসা পায়না
: তবে কেন ভালোবাসলাম? এত এত..
: বেশী ভালোবাসতে নেই
: এতে কি হয়?
: এদেরকে কেউ ভালোবাসেনা
: অনেক দিয়ে সামান্য আশা করেছিলাম
: ভুল তবে শুরুতেই করেছিলে
: জানি
: এখনো আশা করছো?
: হুমম..
: হাহ্ বেচারা!
৫- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ২৬ (তুমি সূর্য, পৃথিবী আমি)

: আছো কেমন?
: গ্রহের মত
: বড্ড জটিল তোমার কথা
: অবস্থানটাও
: কি হয়েছে?
: গ্রহদের নতুন কিছু হয়না
: মানে কি?
: একই কক্ষে আবর্তণ
: তো নক্ষত্রটা কে শুনি!
: তুমি নিজে
: হাহ্ বাদ দাও
: হুমম..
: আমার চেয়ে ভালো কেউ জুটবে
: কাছেও আসতে পারিনা
: হুমম
: পারিনা দূরেও যেতে!
: কেন?
: কাছে আসার অধিকার, দূরে যাবার শক্তি নেই
: বাদ দাও না..
: আচ্ছা এমন কেন হয়?
: জানিনা, কষ্ট পাচ্ছো তা বুঝি
: এর সমাধান নেই তাও বুঝি
: হুমম
: মন খারাপ হয়না?
: হয়
: আমাকে একটা ফোনও দেয়া যায়না?
: বাদ দাও তো...
: যা বলবে তা ই সই
: কেন?
: পাছে কক্ষপথের বিচ্যুতি ঘটে।
: বড্ড জটিল তোমার কথা
: হা হা হা (দুঃখে মাখানো হাসি)
৮- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ২৭ (কাপুরুষ)

: কাপুরুষ
: (চুপ)
: কি প্রমান হলো?
: বিবেকে বাধা
: আমার তা নেই!
: হয় অতিক্রম নাহয় জয় করেছো
: কেন প্রাপ্যটা নিলে না!
: প্রাপ্য ছিলো কি?
: বুঝো না!
: বুঝায়েছো?
: কিছু বুঝে নিতে হয়
: যদি ভুল বুঝি?
: ভুল কি মানুষ করেনা?
: ভুলের সাজাও কিন্তু পায়!
: সাজা কে ভয় করো?
: না
: ভয় তবে কিসে?
: ব্যাক্তিত্ব হারাতে
: ব্যাক্তিত্ব রেখে কি পেলে?
: আত্মতৃপ্তি
: না পাওয়ার হতাশা নেই?
: আছে
: ভুল করতে শেখো, ঐ হতাশা দূর হবে
: চিরকালই বুদ্ধিপ্রতিবন্ধী
: তাতে কি?
: ভুলটা যদি তোমার কাম্য না হয়?
: হি হি হি তবে একটু ঝাড়ি খাবে, তাতে কি?
৯- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ২৮ (কেমন আছেন, ভালো আছি)

: ভালো?
: হ্যাঁ তো, আপনি? (চঞ্চল)
: হুমম, চলছে (মনমরা হয়ে)
: এমন করে চল্লে কিভাবে হবে?
: কেন?
: চলতে হবে গড়গড় করে :) (হাসি)
: যা দিনকাল পড়েছে (বিরক্ত)
: তা বলে বয়স কি থেমে আছে?
: হুমম..
: যেমন হোক দিন, মন রঙ্গীন চাই
: কিভাবে পারেন?
: আজও ভালোবাসতে পারি বলে
: যেদিন আর পারবেন না!
: মুখ লোকাবো
৯- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ২৯ (তার সাথে কল্প কথা)

(কোন দিন এতটা আগ্রহ দেখাবেনা, তবু কল্পনায়...)
: এত রোগা হয়ে গেছ! (শংকা)
: নাহ্ ঠিক আছি

: চোখ এত লাল! ঘুমাওনা?
: ঘুমাই
: দোহাই, সত্য বলো
: ভোর রাতে ঘন্টা খানেক
: সারা রাত কি করো?
: কথা বলি
: কার সাথে?
: তারায় তারায় তোমার মূর্তি গড়ে
: ঠোট দু'টুতো কয়লা করেছো
: এমনই ছিলো
: হাহ্.. দিনে কয়টা?
: হিসাব রাখিনা
: এত সিগারেটের পরেও বেঁচে আছো?
: নিজেও অবাক হই!
: অবাক হতে শিখেছো তাহলে?
: সবাক তো কোন কালেই ছিলামনা, তাই
: ফোন করতে ইচ্ছা হয় না?
: অনধিকার চর্চা আমার স্বভাবে নেই
: এ তোমার অহংকার
: নাহ এ হীনমন্যতা
: জোর করতে শিখলেনা কোনদিন
: এও হীনমন্যতা
: দেখতে ইচ্ছা হয়না?
: খুউব..
: সামনে আসোনা তবু?
: পাছে ঘিন্না করো
: নিজেকে এত ভালোবাসো?
: অন্যকে অন্যের মত থাকতে দেই
: ছোটলোকের মত কথা বলছো
: হয়ত আমি সেই
: নিজেকে অত বড় ভাবাটা রোগ
: বড় ভাবতে পারলে এত কষ্ট হতোনা
: কি ভাবো?
: যোগ্যতাহীন, বুদ্ধিহীন...
: নিজেকে আড়াল করার ভান
: এ যে সত্য তা বুঝলে দূরে যেতেনা
: আমি কি দূরে?
: আমার কল্পনায় মোটেওনা
: বাস্তবে?
: আমি তোমার কেউনা
১০- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৩০ (রূপক)

: দুঃখকে আমি দুঃখ বলি না
: কি বলেন?
: মেঘলা আকাশ
: আর কষ্ট কে?
: দ্বীপান্তর
: সুখকে তবে?
: বন্ধুবরে চায়ের আড্ডা ফুটপাতে
: বিরহ কে?
: একলা চাঁদের আলো
: ভালোলাগা?
: সরিষা ফুলের ভোরে শিশিরে পা
: স্বপ্নিল কে?
: ফেলে আসা দিন
: কান্না?
: আছড়ে পড়া ঢেও
: প্রিয়ার চোখকে কি বলেন?
: সুখের ছুরি সখার হৃদয়ে
: হুমম..
: আপনি?
: দুঃখকে আমি দুঃখই বলি, কষ্টকে কষ্ট
১০- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৩১ (বাবা'র বিবেক)

: কি দেখছো?
: ঘুমন্ত শিশু আমার
: কেমন লাগছে?
: আজন্মের অসীম মায়া
: অথচ তাকে মেরেছো তুমি!
: বড্ড অবাধ্য
: শাসনে বাধ্য হয় কেউ?
: কথা শুনেনা
: তোমার বুদ্ধিতে ওকে বিচার করছো!
: শাষনহীন শিশু উচ্ছন্নে যায়
: শাষন মানে গায়ে হাত!
: ভুল হয়ে গেছে
: সে ভুলে যাবে, তুমি তা ভুলো না
: হুমম
: নিজে শিশু হয়ে ওর সাথে মিশবে
: হুমম
: শিশু হও, বন্ধু হও, তারপর শেখাও
: এতে লাভ?
: সে বন্ধুর কাছ থেকে শিখবে সহজে
: হুমম
: দূরত্ব বাড়ায়োনা সান্তানের সাথে
: শিশু আমার, আমি তোর বন্ধু হবো।
১০- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৩২ (নিরীহ না পায় চোখরে নীর)

: হ্যালো (নম্র, অসহায়)
: বলো (চাপা বিরক্তি)
: আমি মরলে দেখতে আসবে?
: এ আবার নতুন কোন ফন্দি!
: বলোনা, খবর পেলে আসবে?
: বেশ বিরক্ত করছো
: আর কোনদিন করবোনা
: হঠাৎ মরতে সাধ?
: আমিতো তোমার কেউনা
: কেউ কি হবার কথা! (বিরক্ত)
: না (ভয়ার্ত)
: তবে?
: তবু ঐ চোখে জল দেখতে ইচ্ছা হলো
: মানে কি?
: শুধু আমার জন্যই মমতা মাখা অশ্রু
: হুমম
: আর কোন ভাবেইতো ঝড়বেনা
: তো?
: অন্তত মরার পরে দেখতে চাই
: আমার চোখে মমতা ভরা জল তোমার জন্য?
: হ্যা
: শুধু শুধু ফাও চিন্তা করছো, কাজে মন দাও
: কাজে যে মন লাগেনা :(
: কিছু দিন ঘুরে আসো দূরে কোথাও
: তোমাকে ছাড়া কিছু দেখতে ইচ্ছা হয়না
: ফাইজলামির সীমানা থাকা দরকার না?
: (চুপ)
: আর কিছু বলবে?
: না
: (খট করে ফোন রেখে দিলো)
১১- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৩৩ (বিভ্রান্তি, হুমম... তাই কি?)

: ভালোবাসো?
: হ্যাঁ তো ! (বিভ্রান্তের হাসি)
: দয়া করো, সিরিয়াস হও
: এহেহেম এহেহেম.. (গলা পরিষ্কার)
: সামনে থেকে যাওতো (কপট রাগ)
: ছুচ লে ফির... (দুষ্টমি)
: কেন কষ্ট দাও?
: কেন কষ্ট পাও?
: কিছু বলোনা বলে
: না বলাতেও কষ্ট!
: এ যেন সহস্র বার ক্ষুন :(
: কোন ছুড়িতে?
: তোমার অবহেলার
: দেই কি?
: ওমমম.. তাওতো পাইনা
: ইয়াহ ইয়ুহ হু হু.. (দুষ্টামি হাসি)
: হাসবেনা অমন করে (রাগ)
: কেন রেগে যাও?

: রাগার অধিকারও দাওনি?
: অমন করে কেন ভাবো?
: কেমন করে ভাববো?
: হুম.. তাইতো! (বিভ্রান্তির হাসি)
: শুন্যে দোলছি আমি :(
: আমিও
: অমন করে বলোনা
: হুমম
: আমার কষ্ট হয় হিংসাও
: হুমম (মন খারাপ)
: মন খারাপ হয়ে গেল?
: আমার মন খারাপ হয়না, হতে নেই (বিভ্রান্তির হাসি)
১১- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৩৪ (আনন্দ- উন্মাদ)

: ভালোবাসিইইইই (চিল্লান দিয়ে)
: এ্যাই, খোলা মাঠ পেয়ে কি পাগলামি করছো! (অবাক ও লজ্জা)
: সুখের চাপে ফাটছে বুক!
: তাই বলে... (কথা খুঁজছে..)
: কিছুটা সুখ ছড়ায়ে দিচ্ছি প্রকৃতিতে!
: সুখ কি টায়ার টিওবের বাতাস?
: হ্যাঁ তো! ভালোবাসি....ই....
: এ্যাই চুপ, চুপ (লজ্জা ও কপট শাষন)
: চুপ যে হবেনা এ পাগল
: পাগলের কি হলো আজ?
: আজ যে পাগলী রাজি হয়েছে!
: আরো আগেই রাজি ছিলাম
: তবে বল্লেনা যে?
: বুঝলেনা যে!
: ভালোবাসিইইই....
: এ্যাই কি হলো?
: শচীন কর্তা ভর করেছে মনে
: মানে?
: শুনগো দক্ষিন হাওয়া, প্রেম করেছি আমি..
: তো ১৫ কোটি মানুষের কানে ১৫ কোটি বার বলবে?
: ওনহু, দুই কানে মোট ৩০ কোটি বার বলবো! :)
: হ্যাঁ বলে কি ভুল করলাম? (চাপা হাসি)
: মানে :(?
: সুস্থ মানুষটাকে পাগল করে দিলাম ;)
: এ পাগল নয় প্রেয়সী, আনন্দ- উন্মাদ ;)
১২- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৩৫ (নিস্ফল)

: ভালোবাসি
: ! (অবাক)
: এ এক বিষ্ময়কর অনুভূতি জানো!
: কি বলছেন! (বিষ্ময়ের ঘোরে)
: সত্য
: সম্ভব?
: হলো তো (সহজ করেই)
: কিন্তু আমি কি কখনো...
: বলেছি কিছু?
: তবে?
: দেখেছি, মুগ্ধ হয়েছি, শ্রদ্ধা করেছি...
: হুমম..
: কোন্ ফাঁকে যে... (মন খারাপ)
: এ আপনার ইনফাচুয়েশান
: নাহ্ এ আমার প্রথম সত্য উপলব্ধি
: কিন্তু আমি তো ... (থেমে গেলো)
: জানি আমি
: তবে?
: বলেছি "ভালবাসি", কিছু চেয়েছি কি!
: মানে?
: ভালোবাসা হয়ে যায়, হয়ে গেলো :((মন খারাপ)
: এখন!
: সামলে নেবো
: সেই ভালো
: যদি সম্ভব হতো, যদি... (আমতা আমতা)
: হুম হুম..
: সম্ভব যদি হতো তবে কি ভালোবাসতে?
: সে তো বলতে পারবোনা।
: যাক উপলব্ধিটা স্বর্গীয়
: আর কষ্টটা?
: নারকীয় (ঠোট কামড়ে কান্না চাপা)
: কি করবেন এখন?
: দূরে ছিটকে সরে যাবো, বহু দূরে।
১৩- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৩৬ (প্রতিশোধ কামনা)

: পচিশ বার :(
: (গম্ভীর)
: ধরলেন না, কেটে দিলেন
: ইচ্ছা হয়নি (অহংকারী গাম্ভীর্য)
: শেষে বন্ধই করে দিলেন :(
: অভিযোগ?
: নাহ সে অধিকার, অবস্থান কই!
: হুমম
: কষ্ট পেলাম, অনেক
: শুধুশুধু
: হ্যাঁ শুধুশুধু আগ্রহের ফল পেলাম
: এত কঠিন করে কথা কেন?
: সত্যিইতো! দুঃখিত
: আর কিছু?
: আপনি আমার জগৎ এর কেউনা
: কথা কি?
: তা না, আঘাত করেন কিন্তু পরিমাপ করেননা
: এসবের মানে কি?
: আপনার আঘাত কষ্ট দিলো, ফিরেও চাননি
: ইচ্ছা করেইকি আঘাত খাননি?
: হুমম, এতটা অবজ্ঞা পাবো ভাবিনি :(
: ভাবা কি উচিৎ ছিলো না?
: হুমম ছিলো
: তবু অভিযোগের ধৃষ্টতা কেন?
: ভাবছি..
: কী?
: আমি মাটির প্রদীপ, আপনি কেরোশিন শীখা
: মানে?
: চাঁদ এর অবহেলা পাবেন, তখন বুঝবেন এর যন্ত্রনা।
: অভিশাপ দিচ্ছেন?
: হুমম, নিরীহরা প্রতিশোধ নিতে পারেনা, কামনা করে।
১৪- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৩৭ (জোছনা দেখায় আড়ি)

: হেই!
: হুমম (চুপচাপ)
: আজ বৌদ্ধ- পূর্ণিমা!
: জানি (অনাগ্রহ)
: জোৎস্না দেখবেন না!
: না
: এও বিশ্বাস করতে বলেন?
: হুমম
: আয়োজন করে কে দেখতো?
: দেখতাম, স্বীকার করি
: এখন কেন তবে?
: আড়ি
: জোছনা দেখায়!
: হুমম
: কেন!
: এ বিরহ সহ্য হয়না বলে
: জোছনায় কি বিরহ থাকে?
: একলা জোছনা মরণ- বিরহ
: দু'কলা হলে তবেই ভাঙ্গবে আড়ি?
: হুমম

: (আমাকে নিয়ে কি দু'কলা হওয়া যায়?)
: (আমার আড়ি কি ভাঙ্গানো যায়না?)
১৪- ১০- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৩৮ (দুই বন্ধু)

: কিরে! তোর একি হাল?
: দোস্ত রাতে ঘুম হয়না রে :(
: তার স্মৃতি ঝাপসা হয়নি?
: নাহ্ জীবন্ত হয় দিনকেদিন
: কছ কি?
: স্মৃতিরও হাত পা আছে, আকড়ে ধরে।
: খাওয়া দাওয়া?
: ওর প্রিয় খাবার গলা দিয়ে নামেনা :(
: সব খাওয়াই কি ওর প্রিয় ছিলো? ;)
: হ রে, শালা একটা খাদক ছিলো :)
: তোরে হাসলে খুব নিষ্পাপ লাগে
: (চুপ)
: কিরে কি হলো?
: এ কথাটা প্রতিদিন কতবার বলতো!
: মোবাইল ভেঙ্গেছিস কিভাবে?
: ভেবেছিলাম ওর গুড- মর্নিং কল, দেখি এলার্ম
: এরপর?
: আছাড় দিছি
: লাঞ্চ করবিনা?
: লাঞ্চ করিনা
: কেন?
: ও নিজের হাতে খাইয়ে দিতো
: তুই তো মারা যাবিরে!
: শালা মরিওতো না? :(
: কি কছ এইসব?
: ওই দিন ট্রাকের নীচে পড়তে পড়তে বেঁচে গেলাম
: দোস্ত!
: তবু যদি খবর পেয়ে মরা দেখতে আসে।
: এত ভালো বাসিস না রে! :(
: বেসেইতো ফেলেছি! ফেরার পথ নেই!
১৫- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৩৯ ("পাগল হয়ে যাচ্ছি" এই অনুভূতিটা অসহ্য ☹)

: অনু!
: হুমম বলো
: বদ্ধ উন্মাদ কেন হইনা?
: এ্যাই !! কি বলছো!!!
: "পাগল হয়ে যাচ্ছি" এই অনুভূতিটা অসহ্য :(
: কেন হচ্ছে?
: মোবাইল বেজে ওঠে, ভাবি তোমার কল!
: কলতো করিই!
: নাহ প্রতিটি কল..
: হুমম
: কলিং বেল এ ও!
: তোমার বাসায় এসেছি কোনদিন?
: নাহ, তবু মনে হয় বুঝি তুমি :(
: বারান্দায় দাড়াতে পারিনা?
: কেন?
: রিক্সা থেকে যাত্রী নামে, এ কেন তুমি নও!
: আর?
: টিভি দেখিনা? :(
: মা বকে?
: নাহ! সুন্দর দৃশ্য তোমাকে ছাড়া দেখতে কষ্ট হয়!
: পাগল একটা!
: আজ সকালে গুড "মর্নিং কল" কেন দিলেনা?
: ঘুমাচ্ছিলাম তো!
: আমারতো ঘুমটাও হয়না তোমাকে ভেবে :(
: আমার হয়! শেষ রাতে চোখ লেগে এলো।
: তোমারও ঘুম হয়না!
: শুধু কি তাই? আজকাল তোমাকে হ্যালুসিনেশনে দেখি
: এ্যাই !! কি বলছো!!!
: "পাগল হয়ে যাচ্ছি" এই অনুভূতিটা অসহ্য :(
১৫- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৪০ (ঈর্ষার ঝগড়া)

: ফিরে যাবো!
: হ্যাঁ ভুলেও যাও
: গায়ের ওড়নাটা খুলে দিয়ে যাই?
: এর মানে কি?
: সবইতো দিয়েছি, ইজ্জতটাই বাকী ছিলো
: (চুপ)
: সিম্বল হিসাবে এইটাও দিয়ে যাই
: কি বলছো!
: যেতেই যখন বলছো, নিঃস্ব হয়েই তবে যাই
: অতিরিক্ত রাগে দোষ ঢাকছো?
: দোষ করি আর নাইবা
: তো?
: ফিরে যাওয়া ভুলে যাওয়া কেন ওঠবে?
: আমাকে আড়াল করে অন্যে কেন মেসেজ দিলে
: কেন মোবাইল ধরতে যাও আমার?
: ধরবোনা?
: আমি তোমার, তুমিও জানো, আমিও
: (চুপ)
: জানোনা?
: জানি
: তবে কিছু নিজস্বতা কেন রাখতে দিবেনা?
: চাইনা অন্য কেউ থাকুক মাঝে
: মাঝে তো নেই!
: তবে?
: তুমি আমার ঘর, অন্যরা চলার পথ।
: (চুপ)
: তুমি আমার লক্ষ্য, তোমার ভিতরে আমার বাস
: আর পথ?
: চলার জন্য অপরিহার্য্য, লক্ষ্যও নয়, ভিতরেও বাস নয়!
১৫- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৪১ (বন্ধু বনাম বর)

: আমাকে আর্কিমিডিস বলো :) (দুষ্টমি)
: আর্কিমিডিস। (মুচকি হাসি) ;)
: কেন বল্লে?
: তাইতো কেন বল্লাম? (চাপা হাসি)
: আবিষ্কার করলাম
: কী?
: তোমার আমার পছন্দ একেবারেই ভিন্ন।
: হুমম
: ভালোবাসাটাও ;) (দুষ্টমি)
: সে কেমন?
: তুমি আমাকে আমি তোমাকে
: হুমম এখানেও তো অমিল, হা হা হা
: এতে কিন্তু ভালোই হলো ;)
: সে কিভাবে?
: তুমি আমার, আমি তোমার, তাইনা?
: হ্যাঁ তো!
: তোমার জগৎ আমার, আমারটা তোমার
: হুমম
: তারমানে কি হলো?
: তোমার দু'টি জগৎ, আমারও :)
: পছন্দের মিল নেই, তবু কেন এত পছন্দ করি?

: বন্ধুতে বন্ধুতে পছন্দের মিল থাকতে হয়
: আর..
: বর এর সাথে থাকতে হয় মনের মিল ;)
: সারমর্ম কি হলো তবে?
: বন্ধুতে পছন্দ,বর এ মন এর মিল থাকা চাই।
১৬- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৪২ (অমীমাংসিত মীমাংসা)

: ভালো কিন্তু বেসে ফেলেছো! ;)
: কৈ নাতো!
: ঐ হ্যাঁ তো :) (দুষ্টমি)
: জীবনেও না
: জীবনেও হ্যাঁ
: প্রমান কি?
: ঠোঁট বাকিয়ে ঢং করতে আগে?
: হুমম না
: আমি করি, তুমিও আজকাল করছো ;)
: ওমম...হুমম মানলাম, আর?
: খুশি হলে আমি কি দুষ্টমি করি?
: টিটিটংটিংটং বলো :)
: আজকাল তুমিও কি বলছোনা ? :) (গর্বের হাসি)
: একসাথে চললে প্রভাব কিছুটা পড়েই
: বাচ্চাদের সাথে কান- টানা- টানি আগে খেলতে?
: নাহ
: এ আমার খেলা, ঐ দিন তুমিও তা করোনি?
: করেছি :(
: আমাকে কেউ "বাট্টু" বল্লে মন খারপা করোনা?
: হয়ে যায়
: সারা রাত জেগে থাকোনা!
: (চুপ)
: তো বলো, ভাল কি বেসে ফেলোনি?
: হুমম... :((ধরা খেয়ে প্রচন্ড মন খারাপ)
: হা হা হা হা হা...
: হাসছো যে! (অবাক)
: এবার প্রমান করে দেই, আসলেযে ভালোবাসোনি?
: দোহাই, ওই কাজ করোনা!!!!
: ওমা! এ কেন?
: আমি এতটুকুতেই খুশি।
: (চুপ)
১৭- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৪৩ (মেয়েলী মনকষ্ট মনেমনে)

: বেশী আশা করছি?
: না
: ওর কি আগ্রহ কমেছে?
: হুমম... নাহ্
: না পাওয়াটা কোথায় তবে? :(
: অবিচল বিশ্বাসে উচ্ছলতা থাকেনা
: পরিষ্কার হলোনা... (সন্দেহ)
: তুমি নারী, সম্পর্কের শুরুতে "না"তে ছিলে
: হুমম..
: তোমার "হ্যাঁ" এর জন্য সে কি করেনি!
: হি হি হি.. পাগল একটা! (কি মজা) ;)
: তুমি রাজি হলে
: রাজি আগেই ছিলাম, "হ্যাঁ" বল্লাম দেরীতে।
: "হ্যাঁ" প্রাপ্তিতে তার ছেলেমানুষি উচ্ছাস সেদিন সবাই দেখেছিল
: হি হি হি.. পাগল একটা! (কি মজা) ;)
: সে তোমাকে বিশ্বাস করলো
: হুমম
: আশ্বস্ত হলো, তুমি তার, কেবলই তার!
: হুমম
: তোমার নাটাই নিলো হাতে তার।
: নেয় নাই :(, আমি দিয়েছি তুলে।
: হুমম
: তাই বলেইকি উড়াচ্ছে আমারে অহবেলায়?
: পেয়ে গেলে পুরুষ প্রকাশে ভালোবাসা "অবহেলায়"
: রাত জেগে কথা বলার কত সখ ছিলো আগে?
: আর এখন?
: রাত ১১ টা মানে তার গহীন রাত :(
: তার শান্তির ঘুম, সে জানে তুমি তার
: দস্যি ছিলো, আবদারও ছিলো অনেক
: আর এখন?
: তার দস্যিপানার আশায় আশায় অভিমানে মরি :(:(
: ভালোবাসা পুক্ত হলে, ছেলেরা অভিভাবক হয়ে যায়
: তো!
: অভিভাবক কি দস্যি হয়?
: তার দস্যিপানার জন্য যে মরি!
: করবে করবে :) তখন কেঁদে কূল পাবেনা..হি হি হি।
১৭- ১০- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৪৪ (এসেছি ফিরে)

: পেরেছি :(
: কী?
: ফিরে আসতে
: কিভাবে বুঝলে?
: না তাকায়ে থাকতে পারি
: আর?
: চায়না, তবু ফোন করতেই হতো!
: এখন?
: বিরত রাখতে পারছি
: এতেই মনে করছো ফিরতে পেরেছো?
: ব্যাক্তিত্ববোধ জেগে ওঠছে...
: ছিলোনা কি!
: ছিলো, তবু বেহায়া হয়েছি শুধু তার কাছে বহু বার
: ফিরে আসতে হলো কেন?
: যার কাছে মূল্যই নেই তার কাছে কেন যাওয়া?
: হুমম
: আঘাতে কতটুকু লাগে তা ফিরেও দেখেনি
: হুমম..
: অবহেলা দিয়েছে, মনে একটুও দাগ কাটেনি!
: নিজেকে এমন অবস্থানে কেন নিলে?
: নিজেও অবাক হচ্ছি!
: কেন?
: ভালোবাসা যুক্তি মানেনা, হয়ে যায় .. তবু..!!!
: তবু কি?
: যার কাছে আমারই মূল্য নেই! তার পিছে কেন ঘুরলাম মন দিতে!!
: এখন কি তাহলে ফিরতে পেরেছো?
: হ্যাঁ
: মন নিয়ে ফিরতে পেরেছোতো!
: নাহ্
: তবে কি তারে দিয়ে এলে!
: নাহ্ ডুবিয়ে মেরেছি মন ফেলে আসা রাতজাগা রাতগুলোতে।
১৯- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৪৫ (প্রেমের জগৎ বনাম বাস্তব জগৎ)

: অনু!
: কি গো? (দুষ্টমি) :)
: প্রেম আর বাস্তবের জগৎ আলাদা!
: তাই কি? ;) (মুচকি হাসি)
: নয় আবার! আবিষ্কার করলাম (সিরিয়াস)

: কি বলেন আমার আর্কিমিডিস ;)
(চাপা হাসি)
: তুমি বুঝনা! প্রেমের দুঃখ কি দুঃখ?
: তো!
: প্রেমের দুঃখ হলো সুখের জ্বলন,
: তাই কি? ;)
: হুমম.. তোমার দেয়া কষ্ট সুখের চেয়েও সুখ
: আর কিছু? (দুষ্টমি মাখা আগ্রহ)
: প্রেমের সাগরে পানি নেই!
: হি হি হি কি বলছো!
: সত্য- প্রমিকের অভিজ্ঞতার কথা
: প্রেমসাগরে পানি নেইতো আছে কি!
: কিছু নেই! শুন্য, ঝাপ দিলাম জল তল কিছুই পাচ্ছিনা
: হুমম :)
: প্রেমের ঝগড়া কিন্তু ঝগড়া নয়!
: ওমা ঝগড়া আবার কি হবে!
: প্রেমের ঝগড়া হলো কাছে টানার অজুহাত
: ওমা!!! তাই বলেই কি ইচ্ছা করে ঝগড়া লাগাও ;)
: সিরিয়াস হও..শুনো
: হুমম সিরিয়াস, বলো ;) (চাপা হাসি)
: প্রেমের সুখও কিন্তু সুখ নয় :(
: কি তবে?
: (চুপ)
: মন খারাপের কি হলো!! বলোনা :(প্রেমের সুখ কি?
: প্রেমের সুখ হলো পাষাণ পিপাষা, যত পাই তত চাই।
: মন কেন খারাপ হলো :(, এ্যাই...
: তোমায় পেয়ে আমি সুখের অসীম পাষাণ পিপাসায় পিপাসী।
: স্বার্থপর
: কেন?
: শুধু তুমিই পিপাসী, তোমায় পেয়েও পাবার পিপাসায় আমার বুক ফেটে যায়!
২০- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৪৬ (৩০০ দিনের স্বর্গবাস)

: তোর এমন হাল কেন?
: ভালো আছি।
: ভনিতা নয়। তো... কেন?
: স্বর্গবাস সইলোনা
: কার দোষে?
: ভাগ্যের
: আড়াল?
: নাহ এই ই সত্য
: কয় দিনের?
: ১০ মাস
: হুমম ৩০০ দিনের স্বর্গবাস
: আমিতো সেকেন্ডে গুনি
: কেন?
: বড় মাত্রায় সুখ বৃদ্ধি।
: রাত জাগিস?
: না, রাত আমাকে জাগায়
: উল্টো করে কেন বলিস?
: বলিনিতো!
: রাত কেন জাগায়?
: অন্ধকারের পথধরে স্মৃতির আনাগোনা।
: বড্ড জটিল হয়ে গেছিস
: জীবনটাও :(
: স্বর্গ কিন্তু আট টা ;)
: আমার স্বর্গ একমুখী এক।
: অন্য স্বর্গে কেন নয়?
: ঐ গুছানো স্বপ্নটাই যে চাই!
: কেন?
: আনাচেকানাচে রেখে এসেছি স্মৃতি
: নতুন করে গড়ে তুলো
: নাহ্‌, স্মৃতিছাড়া মানুষ বাঁচেনা
: এখন কি বেঁচে আছিস!
: (চুপ)
: অন্য কাউকে সুযোগ দে, স্বর্গ গড়ার
: নাহ, স্বর্গ বিচ্যুতির ব্যাথা বড় কষ্ট রে..
: সুযোগ দে, তোর আঙ্গিনায় এসে গড়বে স্বর্গ
: (চুপ)
২১- ১০- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৪৭ (সংশয়)

: কি হলো?
: ভাবছি
: কী?
: বলতে ভালো লাগে
: শুনতে খারাপ লাগে বলেছি?
: শুনতেও ভালো লাগে
: হয়ত এজন্যই বলে আনন্দ পাই
:কিছু বলবে?
: কথা?
: ওম... না
: (বুদ্ধু)
: তুমি?
: নাহ্‌ তো!
: (শুধু শুধুই আকাশ কুসুম)
: তুমি ভালো
: হি হি.. জানি
: হুমম.. :(
: কিছু বলবে?
: নাহ্‌ তো!

: (বুদ্ধু বল্‌ না, বলে ফেল)
: (আমাকেতো বুঝোই, তুমি বলছোনা কেন?)
২২- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৪৮ (উদাসিনী- অবহেলা'র কষ্ট)

: আজ ২৯ দিন হলো
: কী?
: যেচে কথা বলিনা নিজে
: তো!
: খেয়ালও করেনা তা :(
: সে বলে?
: হুমম মাঝে মাঝে
: রাগ করেছো?
: সে অধিকার পেলাম কই !
: সে?
: আমি অমন কেউ নই তার কাছে
: কেন তবে দিন গুনো?
: ভালো বাসেনা
: কথা?
: কথা না, কিন্তু ঘৃনা করুক
: কেন?
: কিছু একটা পেতে চাই বলে
: অবহেলা করে?
: না, ঘৃনাও না
: তবে?
: ফিরওযে চায়না :(
: সে আছে তার মত
: আমিতো আমার মত আর নেই :(
: এতে ওর কি!
: তাইতো, আমার কিছুতেই তার কিছুনা
: হুমম
: এই উদাসিনী- অবহেলা'র কষ্ট সবচেয়ে বেশী
২২- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৪৯ (যুগল)

: হ্যালো
: হুমম
: পৌছেছো?
: হ্যাঁ
: আমার মিসকল কই তবে?
: দরজা খুলছি মাত্র
: দেরী কেন?
: ট্রাফিক
: টেনশনে থাকি

: তবু একদিনও আগে পরে হয়না!
: মানে?
: দেরী হলেও কখন বাসায় আসি কি করে বুঝো?
: কেন?
: যত দিনই অপেক্ষার পরে কল দাও, তখনই দরজায়
: এ হলো মনের টান ;)
: তাই বুঝি :)?
: হ্যাঁ গো, বুকের দড়জায় কড়া নাড়ে তোমার পায়ের ছাপ
: যে বুকে আমার মাথা স্বপ্ন দেখি, সেখানে কিনা পা!
: ঐ পায়ের বেশী যোগ্য তো নয় এই বুক :(
: উল্টো
: দাসী হয়ে রবো, রাণী করে রেখো
: পূজারী হয়ে রবো, দেবতা করে রেখো।

: (তোমার কাছে এক পৃথিবী সুখ, বুঝাতে পারিনা)
: (তোমার জন্য মরতে পারি, এ সবচেয়ে সহজটি, বলতে পারিনা)
২৩- ১০- ০৮, ঢাকা।

(অর্ধশততম) সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৫০ (একলা পথিক)

: ও পথিক...
: বলো
: উদ্দেশ্য কোথায়?
: একলা চলায় উদ্দেশ্য থাকেনা
: লক্ষ্যভ্রষ্ট?
: না, লক্ষ্যহীন।
: লক্ষ্য ছিলোনা কোন কালে?
: এখনো আছে
: তবে লক্ষ্য লয়েই লক্ষ্যহীন!
: লক্ষ্য আছে তারে দিবো লক্ষ্যস্থির এর দায়
: মিলে নাই তার দেখা?
: তবে কি লক্ষ্যহীন বলি!
: সুখেই আছো!
: সুখে থাকবো, এ যে সুখীমানুষের পণ!
: কেন মিলে নাই তারে?
: আমিও পাইনি, সেও লয়নি চিনে!
: যুগল পথে যুক্ত থাকে আশাহত'র দুঃখ
: আশা তো করিনা!
: কেন?
: সুখীমানুষের আশা করা মানা
: কখন থামবে পথচলা?
: থামবেনা তো!
: তবে?
: হয়ত লক্ষ্যহীন নয়ত লক্ষ্য যুক্ত হবে।
: তবু কি শেষ হয়না সব কিছু'র?
: মরে গেলে?!
: সেই ধরো..
: সুখীমানুষ মরেনা, তোমাদের হৃদয় পথে নিত্য তার আনাগোনা রবে।
২৩- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৫১ (কথায় কথায় কখন কিভাবে!)

: প্রেম করোনা
: করতে হয় কি!
: তা ঠিক, হয়ে যায় :(
: তবে কেন?
: তাও ঠিক
: হুমম
: বড় কষ্ট রে, বড়ই কষ্ট :(
: (চুপ)
: মৃত্যুকষ্ট তুচ্ছাতিতুচ্ছ প্রেমকষ্টের চেয়ে।
: তাই কি?
: প্রেমের অনুভূতি জাগতিক কিছু নয়!
: তবে?
: ব্যাখ্যাতীত সুখ, ব্যাখ্যাতীত কষ্ট।
: এমন কেন?
: যে সত্যিকারের বালবাসে নাই সে বুঝবেনা
: সবাইকি সত্যিকারের ভালোবাসে?
: সবার কথা কিভাবে বলি?
: নিজের কথা বলো
: বহুবার মনে হয়েছিলো, বুঝিবা ভালোবাসি
: ছিলোনা?
: নাহ্, সবই জাগিতক ভালোলাগা ছিলো
: কখন বুঝলে তবে?
: যখন আকাশ,বাতাস, সাগর সব একাকার হয়ে গেল
: (চুপ)
: আমি শুন্যে ভাসতে লাগলাম
: আর! (আগ্রহ)
: চোখ দিয়ে আনমনে গড়িয়ে পড়লো জল।
: কি বলছো!
: প্রেম জাগতিক কিছু না'রে :(, হলে বুঝা যায়
: কেন তবে হয়ে যায়?
: জানিনা, হয়ত নিজেকে সপে দেওয়ার সাধ মজ্জাগত।
: তারে বলে দেখেছো?
: তারও পথ বাধা, ফেরার পথ নেই।
: কি করবে তবে?
: দিন তো কেটে যায়, রাত কাটানোর বুদ্ধি বের করছি :(

: (তোমার কষ্ট আমাকে শুন্যে ভাসাচ্ছে, কষ্টের এ আবেশ জাগতিক নয় :( )
: (তুমি খুব ভালো, সাবধান হও, এ কষ্ট তুমি সইতে পারবেনা)
২৪- ১০- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৫২ (বিদায়)

: বিদায় তবে :(
: দিলে না নিলে?
: হলো
: হুমম .. :(
: কখন কিভাবে হয়ে গেল?
: অন্ধকার ছাড়া আলো'র অস্তিত্ব যায়না বুঝা
: অন্ধকার দিয়েই বুঝতে হলো?
: হুমম..
: পাশাপাশি'র মানেই বুঝিনি!
: কিছু বুঝা হয় বিচ্ছেদে
: অন্ধকারটাইকি সার হলো?
: নাহ্ এ ট্রাঞ্জিশন বৈ কিছু না
: আবার তবে কিভাবে!
: তীব্র আলোক সন্নিকটে তোমার
: তুমি?
: আমি ক্ষিনপ্রায়ের যোগ্য
: তীব্র আলোতে চোখ ধাধিয়ে যায় :(
: ফুওও.. দিয়ে দিলাম, ধাধাবে না :)
: কিভাবে পারো এত সহজে সুখী হতে?
: তুমিওকি শিখনি?
: বিদ্যা বয়েই গেলাম, কাজে লাগলো কৈ!
: (চুপ)
২৫- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ ৫৩ (একটি কাঁথায় যুগল স্বর্গ)

: শীত নামানো বৃষ্টি?
: হুমম
: ঘুম?
: না
: ঘুমের জন্য যথার্ত কিন্তু!
: স্মৃতি জেগে ওঠলে ঘুম পালায়ে যায়

: মরবে তুমি স্মৃতি রোগে
: মরিওতো না :(
: (চুপ)
: স্বপ্ন শুধু কল্পনাতেই ঘুরে
: কী স্বপ্ন?
: একটানা এমন বৃষ্টির দিন
: হুমম হুমম..
: একটি কাঁথায় যুগল স্বর্গ।
: গড়ে ছিলো?
: নাহ স্বপ্ন ছিলো
: হয়নি কেন!
: স্বপ্ন শুধু কল্পনাতেই ঘুরে
২৫- ১০- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৫৪ (দুজনে, বাদল দিনে)

: কি গো? ;)
: হ্যাঁ গো :)
: আপিস?
: হ্যাঁপিস
: বৃষ্টির দিনও! থুত্তুর :(
: অফিস কি বৃষ্টি বুঝে?
: বউ কি অফিস বুঝে?
: বৃষ্টিতে অফিস কি ভালো লাগে?
: বস কে বলো
: বস বলবে কার কাছে!
: বৃষ্টির দিন, তোমাকে দেখবোনা! :(
: বৃষ্টির সুখ কিন্তু বিরহে! ;)
: সে কিভাবে?
: জানালায় দাড়ায়ে বৃষ্টি ধরো
: তুমি?
: আমিও ধরবো...
: দেখতে ইচ্ছা হয়না?
: বউ, বৃষ্টি দুইটাকেই
: কবে হবে?
: হবে, রিক্সায় কোন এক দিন বৃষ্টিভ্রমন
: এ্যাই জানালায় যাও
: বৃষ্টি ধরতে?
: নাহ্ একটা ফু দিয়ে দাও ;)
: কি হবে?
: ঝড় হচ্ছে তো
: এতে কি?
: তোমার বুকের বাতাস মিশুক বাতাসে
: তারপর?
: সেই বাতাস আকড়ে ধরুক আমারে
: জানালায় ভিজছো!
: হ্যাঁ, তোমার তা পছন্দ
: বাদ দাও, জ্বর হবে
: হোক, রোগ হলে তুমি পাশে থাকো ;)
: পাগলী!
: (কেন এত ভালবাসি!)
: (কেন এত ভালবাসি!)
২৬- ১০,০৮। ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৫৫ (ভুলে যাবো!)

: ভুলে যাবো!
: হুমম..
: মুখে এলো?
: পরিস্থিতি
: হার মানলে?
: এভাবে দেখছো কেন?
: জীবন জড়িয়েছি বলে
: আলাদা করো
: কি হয়েছে তোমার!
: বুঝলাম, সম্ভব না
: আগে কেন বুঝনি?
: (চুপ)
: ঝাপ দিয়েছি, তুমি প্যারাসুট
: নিরুপায়
: পরিস্থিতি মোকাবেলা করো, পাশে আছি
: আর পারছিনা
: তবে কি কাপুরুষকে আমি...!
: চেননা?
: তাইতো বলি! কাকে চিনলাম?
: (চুপ)
: হৃদয়ে একটাই ফ্রেম থাকে
: ছবিটা বদলানো যায়
: যদি ফ্রেমটা তোমার হয়, নাকি?
: সেখানে তুমি আছো
: এর প্রমান দিচ্ছো ভুলে যাওয়ায়!
: শুনো
: হুমম
: ভালোবেসেছি, নিঃস্ব হয়ে যাইনি
: (চুপ)
: পথ চলার শক্তি হৃদয়ে আছে
: জানি
: অপেক্ষায় থাকো, আমার সুখে হিংসা করবে।
২৬- ১০- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৫৬ (পগালী, আকাশ কখনো ভাঙ্গে!)

: কি হলো!
: কিছুনা :(
: কিছু তো
: (চুপ)
: মেহেন্দিতে রঙ ধরেনি, তাই?
: না
: পূর্ণমার দিন আকাশ মেঘলা বলে?
: না
: বৃষ্টির দিন, কাঁথা গায়ে ঘুম হয়নি বলে?
: জানো তুমি, ঘুমের পাগল নই!
: মা বকেছে?
: ওঁনহু :(
: পুতুলের বিয়ে ভেঙ্গেছে ;) (চাপা হাসি)
: বাচ্চা আমি? মজা পাচ্ছো! (কপট রাগ)
: মেঘলা দিনে মেঘলা মুখ কেন?
: বাদ দাও
: তোমার কোনকিছু বাদ দিলে কি চলে :(?
: এ জন্যই
: ওমা! ভালবাসি বলে মন খারাপ! (আশ্চর্য)
: শুধু তাই নয়
: তবে!
: নিজেও তো ভালবাসি!
: মন খারাপের কি হলো?
: যদি ভেঙ্গে যায়! বাঁচবোনা
: পগালী, আকাশ কখনো ভাঙ্গে!
: আকাশ সমান ভালবাসায় কি তবে এমন হয়?
: কি!
: অতিরিক্ত ভালবাসায় ঠোঁট উল্টে মন খারাপ!
২৮- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৫৭ (সখা কেন তুমি "বন্ধু" হলে ☹ !)

: বুড়ি
: হ্যাঁ বলো
: কিরে! তুমি করে কেন?
: এমনি :((মন খারাপ)
: জুতা চিনস্?
: কি বলবা বলো
: এ্যাই, লজ্জা লাগছে কিন্তু :(
: কেন?
: তুমি তুমি করছিস কেন?

: (ভালো যে বাসি বুঝে গেল!)
: (আয়হায়! ভালোবেসে ফেল্লোনাতো)

: এত ঢং করছিস্ কেন? যা খুশি কমু
: এই তো ডার্লিং আমার :)
: হইছে হইছে
: কি হইছে সোন? আওয়াজ কই! (হে হে হে)

: (বুদ্ধুটা বুঝলনা)
: (ছি ছি কি চিন্তা করছিলাম!)

: মুখের লিমিট নাই?
: ছিলো কোনদিন!
: ছোটলোক
: ওয়া ওয়া ;) ট্যা ট্যা..এ.. (হা হাহা)
: দোস্ত তুই খুউব ভালোরে
: দোস্ত আমি জানিরে ;)
: কেন ভালো?
: খারাপ হতে যোগ্যতা লাগে যে!
: ও তুইতো আমার যোগ্যতাহীন মনুষ
: ইয়েপ :)

: (কেন তুমি বন্ধু হলে :( )
: (তুই আমাকে বুঝিস, কত ভালো বন্ধু আমার তুই!)
২৮- ১০- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৫৮ (কিভাবে বলো প্রেমে পড়িনি!)

: বলছো এ প্রেম নয়!
: হুম..
: আমার ঈশ্বর জানে, প্রেমে পড়েছি
: কিভাবে?
: আনন্দ ঝংকারে চমকে ওঠি!
: আর?
: আমার ভুবন বেশ ফুরফুরে
: হুম হুম..
: সেতারের তালে সব বুঝি নাচে
: আচ্ছা!
: অপেরা ঢং এ নাচতে মন চায়
: ওরি বাবা..আর? :)
: মনের বদ্ধ ঘরে রশ্মি ঢুকেছে, টের পাই
: (চুপ)
: ভালোবাসার আলোয় উদ্ভাসিত মনের ঘর
: হুম..
: আগের "আমি"তে এই "আমি"র বিস্তর ফাড়াক :(
: মন খারাপ হলো কেন?
: কষ্টও এখন বড় বেশী আঘাত করে :(
: কি বলছো!
: কষ্টে এখন মন- গগনে মেঘ নয়, সিডরের তান্ডব! :(
: মরেছো তো তবে!
: শুধু শুধুকি বলি, "টের পেয়েছি, প্রেমে পড়েছি"।
৩০- ১০- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৫৯ (কে যেন দেখে গেল সুখীমানুষকে, দেখা দিলো না)

: হ্যালো
: হুম...?
: ভালো?
: সবসময়ই ভালো থাকি, কে?
: নীচে আসবেন একটু?
: কে নীচে আসবে?
: আপনি!
: আমি কে? বলেনতো..
: সুখীমানুষ! জানেননা বুঝি!
: হয়েছে (চিন্তিত), আপনিক কে?
: নাম শুনেছি অনেক, দেখতে এলাম
: আসছি
: আচ্ছা

: হ্যালো, কই আপনি!
: দেখছি আপনাকে
: দেখা দিবেন না?
: না, সুখীমানুষ দেখার সখ ছিলো
: কি জানি কাকে দেখছেন
: নাহ আপনাকেই দেখছি, হাতা গুটানো
: হুমম.. হয়েছে
: চা খাবেন না?
: পরে দেখা হলে, খাবোনে..

: (ছি ছি বেশীইকি আগ্রহ দেখালাম!)
: (ধাঁধাঁয় কি ফেলতে পালাম ;))
৩১- ১০- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৬০ (ফিরে পেতে চাই, ফিরায়ে দিবো বলে)

: এখনো আশায় আছিস?
: হুমম
: যায় যারা তারা ফিরেনা
: জানি
: তবু আশা?
: অন্তত একবার ফিরে আসুক
: এ কেমন কথা!
: ফিরে পেতে চাই, ফিরায়ে দিবো বলে
: কেমন কথা হলো?
: ফেলে গেল, নির্দয়ের মত
: হুম..
: অনেক কেঁদেছি ফিরে পেতে
: এখন?
: চাই ফিরে আসুক, ফিরায়ে দিবো
: এতে কি হবে?
: ফেলে যাওয়ার কষ্টটা সে বুঝবে
: এটুকুই চাওয়া?
: হ্যাঁ, তারপর সব কষ্ট ভুলে যাবো।
১- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৬১ (মানবতাবাদী দল)

: নির্বাচন হবে?
: যায় আসেনা :(
: তবু দরকার কিন্তু!
: হুমম.. তা ঠিক
: ব্যাবসা, চাকরী সব থেমে আছে
: হুম..সেই
: দুর্নীতি হোক, পেটে ভাত চাই
: হা
: কাকে ভোট দিবি?
: এই নিয়েইতো বিপদ
: সে কেন?
: অন্ন জোগাতে ব্যাস্ত, দলের ভালমন্দ কখন বুঝি?
: তবু ভোট!
: দল তো করিনা, ব্যাক্তি দেখতে হবে
: শুধু ব্যাক্তি!
: তা ঠিক, পাশ করবে কিনা তাও বুঝতে হবে ;)
: হে হে হে হুমম.. ভোট পচায়ে লাভ কি?
: অপেক্ষায় আছিরে
: আমরা সবাই অপেক্ষায় আছি, দেশের ভালোর
: নাহ, আমার হলো একটি দলের অপেক্ষা
: আবার নতুন দল!
: নাহ নামে নয়, কাজে যারা মানবতাবাদী দল।
২- ১১- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৬২ (শিশুর নয়নে রুপসী এ দেশ আমার)

: আম্মু, একি!
: নৌকা
: নৌকায় যাবো?
: হুমম
: ওমা...কি সুন্দর!
: এ্যাই..ই কিনারে যাবেনা
: আম্মু কী পাখি?
: চন্দনি শালিক
: কি স্মার্ট!
: হুমম
: শাপলা!
: হুমম
: বড় পাতাটা কী?

: শালুক পাতা
: ধরে টানি?
: না, পড়ে যাবে!
: তুমি ধরো আমাকে
: আম্মু ছিঁড়েনাতো!
: গভীর পানি, দেরীতে ছিঁড়বে।
: এ মা..! এ বুঝি দোয়েল?
: হুমম
: এত দ্রুত নাচে! বাহ্ সুন্দর তো!
: মা, দূরে এত গাছ?
: বাড়ী, গাছে ঘেরা
: এ বুঝি আমাদের গ্রাম?
: না আরো দূরে
: এত দূরের পরেও দূর আছে?
: হুম..মাঠের পরে গ্রামে, গ্রামের পরে মাঠ
: ঐখানে মানুষ আছে?
: হ্যা, মায়ার খনি বুকে লয়ে এরা মাটি'র মানুষ
: তুমি চিনো?
: হ্যাঁ
: তোমাকে চিনবে? আমাকে?
: এরা সবাই অতিথিপরায়ণ মামনি
: ওমা! এ কি?
: কলার ভেলা
: সব কিছু এত সুন্দর!
: হ্যাঁ মামনি, এ আমাদের দেশ, সুন্দর একটা দেশ।
৩- ১১- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৬৩ (তোমাকে ভেবে অন্যজনকে...)

: আজ পথে কি কান্ডটাইনা হলো!
: কী?
: তোমাকে ভেবে অন্যজনকে...
: হাত ধরে টানলে!
: নিজে যেচে হাত ধরি তোমার? :(
: তা ধরবে কেন? মুডি (কপট রাগ)
: মুডি নই, ভীতু।
: তো ভীতু, কি করলে আমি মনে করে!
: ডাকলাম গলা খুলে
: তারপর! (আগ্রহ)
: ফিরেও তাকালোনা
: তাকাবেইবা কেন?
: হুমম সেই
: এরপরে..?
: দৌড়ে কাছে গিয়ে ডাকলাম আবার
: সে তাকালো?
: হ্যাঁ রাজ্যের বিস্ময় নিয়ে..
: কি বল্লো?
: মুচকি হেসে বল্লো 'আমিতো অনু নই!'
: তুমি কি করলো?
: বাদ দাওতো..
: বাদ তো দিবোনা..পাইটুপাই বলো
: পাগল
: ইচ্ছা করে ভুল করনিতো! (রাগ)
: :(আমি এমন!

: (জানি এমন না, কিন্তু খেপানোর একটা বিষয় পেলাম ;))
৩- ১১- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৬৪ (আছেই যখন)

: কখন ফিরবে?
: ঠিক নেই
: আচ্ছা
: খেয়ে নিও
: আচ্ছা
: রাগ?
: করিনা
: হয়ওনা!
: কি লাভ?
: কেমন জানি হয়ে যাচ্ছো
: সে খেয়াল তুমি কর?
: ব্যাস্ততা দেয়না অবসর
: ঠিক আছে
: কপাল কেটেছো কিভাবে?
: ও কিছুনা
: রেগে আছো কিন্তু
: বাদ দাওতো, যাও
: এমন কেন হলো?
: কেমন!
: তোমায় অবহেলা
: তোমার ব্যাস্ততা
: এমন জীবন তো চাইনি
: নিজের প্রতিওতো অবহেলা
: এতে কষ্ট নেই, তোমায় অবহেলা কেন?
: আমি তোমারে বুঝি, যাওতো...

: (ভালবাসি খুউব.., পরিস্থিতির কারনে সে কি তা বুঝে?)
: (আহারে বেচারা, নিজের খেয়ালওতো নেয়না)
৪- ১১- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৬৫ (মন যদি দেই,অন্য কিছু রাখবো কেন!)

: মন দিবি?
: কি করবি নিয়ে?
: লাটিম বানাবো
: ঘুরিয়ে মারবি? :(
: মারার মধ্যেই মরণ- সুখ। ;)
: নিজে মরবি না?
: ঘুরিয়ে মরবো :) (চাপা হাসি)
: দুষ্ট কথার বৃষ্টি ঝরাস
: দুষ্ট বল্লি?
: দুষ্টরে কি মিষ্ট বলে! ;)
: শরীর দিবি?
: অসভ্য
: ঠিক করে বল্
: কী?
: দুষ্ট না অসভ্য আমি?
: সব কিছু তুই
: কেমন কেমন? (আগ্রহ)
: দস্যি ডাকাত
: জোর করেছি!
: ও ভালো কথা, কাপুরুষও
: দস্যি কভু কাপুরুষ হয়!
: কেউ হয়না, তুইতো হলি
: অন্যতম? :)
: আমার চোখে
: সিরিয়াস?

: মন নিবি?
: কি করবো নিয়ে?
: লাটিম বানাবি
: ঘুরে মরবি
: মরার মধ্যেই জন্মের সুখ
: (চুপ)
: শরীর নিবি?
: কি করবো?
: আদর করবি, আমরণ।
৫- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৬৬ (তোর ভদ্রতার কাঁথায় আগুন)

: বদলে গেছিস্ :(
: ভাল না খারাপ?
: কার বিচারে?
: তোর!
: জানিনা :(
: তারমানে খারাপ..
: হুমম
: ভালোবাসছিনা?!
: বাসছিস
: সময় দিচ্ছিনা?
: দিচ্ছিস্
: কেয়ার করছিনা?
: বেশীই করছিস্

: এইটা খারাপ?
: হুমম
: সে কিভাবে?
: এত কেয়ার করতে বলেটা কে!
: কি করবো তবে?
: দস্যিপানা
: যেমন
: সুযোগ পেলে জড়িয়ে ধরবি
: আচ্ছা আচ্ছা :)
: সব কিছু কি মুখে বলবো? গাধা।
৫- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৬৭ (মশারী টানাবে কে!)

: চল্ বিয়ে করি
: শর্ত আছে
: রাজি আছি
: মশারী টানাতে হবে
: না না, রাজী নই তবে ;)
: তবে বিবাহ বাতিল
: অন্য শর্ত বল্
: আর যা আছে তা শর্তে হবার নয়
: তবে?
: আপনাতেই হয়
: সে কেমন?
: ভালবাসা, সহ্য কিংবা সমঝতা
: হুমম...সেই
: কি টানাবি মশারী?
: মশায় না কামড়ালেইতো হয়? নাকি?
: কয়েলের গন্ধ অসহ্য
: ওমম..কয়েল দিবোনা
: তবে!
: বল্ না, মশা থেকে বাঁচতে পারলেইতো হয়?
: হ্যাঁ হয়। সে কিভাবে?
: শরীর দিয়ে ঢেকে রাখবো তোর সবটা শরীর ;)
: তোরে কামড়াবে না?
: তোর জন্য সইতে পারি হাজার সাপ কিংবা বিছার কামড়
: তবু মশারী টানাবি না?
: মশারী টানানো আমার আজন্ম অলসতা :)
৬- ১১- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৬৮ (চুমু'র যখন মানেই বুঝিনি)

: কিরে কি হলো?
: ভাগ্যটা যদি উল্টানো যেত
: সে কি কথা!
: ভেবে দেখ
: বল্
: ছোট্ট বেলা কত রূপসী চুমু দিতো
: হুমম হুমম..
: চুমু'র তখন মানে বুঝতাম!
: :) বেয়াদব হি হি হি
: আর যখন চুমুর মানে বুঝলাম... :(
: তো?
: একটা চুমু চেয়ে চেয়ে ভিখারী সাজি
: এ্যাই দেইনা তোরে! ;)
: হাজার চেয়ে তবেই শুধু গালে একটু ছোঁয়া
: চাওয়াটা কিন্তু বেড়েই যাচ্ছে (শাসন)
: আজকাল ভিখারীও পাঁচ পয়সা নেয়না
: চুমু'র মূল্য পাঁচ পয়সা :(!
: যা আছে তোর তা কোটি টাকা
: হুম হুম..
: সেই তুলনায় ঐ চুমুখানা পাঁচ পয়সাও নয়;)।

: (এত ভদ্রভাবে এত অসভ্য আব্দার কিভাবে করিস্?)
: (জোর করতে তো ভয় লাগে, সুযোগটাতো দে)

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৬৯ (থকবো মানে? চাইলেওকি দূর করতে পারবি!)

: অনু! (কপট রাগ)
: হুমম..
: তুই কি আমায় গিলে খাবি?
: রাগ?
: ইশ্, পারতাম যদি (আফসুস)
: আমার সাথে রাগিস না বুঝি!
: করিনা
: কেন?
: যত রাগি অত দূর্বল
: ভালোবাসায়?
: তো! (অবাক হয়ে জানতে চাওয়া)
: বেশী বেশী রাগ্ তবে
: এই ভলোবাসয়ই ডুবে মরছি নিত্যদিন
: :) হে হে
: আচ্ছা আমি কি হাতেন নাটাই!
: কেন বলতো!
: ইচ্ছা মত করিস এদিক ওদিক
: তুই আমার কী শুনবি?
: শুনেই দেখি ;)
: তুই আমার অঝর বৃষ্টি
: (চুপ)
: এজন্যই হাত বাড়ায়ে ছুঁই
: (চুপ)
: মুখে লাগাই, বুকে লাগাই, আর...
: বল্ বল্...
: আমরণ সাথে থাক্, আস্তে আস্তে বলবো...

: (থকবো মানে? চাইলেওকি দূর করতে পারবি!)
৬- ১১- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৭০ (রাস্তায় দাড়াবো তোমারে ভালোবাসি প্লেকার্ড লিখে)

: পারিনা :(
: কী?
: কতটায়ে ভালোবাসি তা বুঝাতে...
: অনু! (রাগ)
: হুমম..
: তুমি বদ্ধ উন্মাদ
: আরো উন্মাদ হতে চাই
: এরচেয়েও বেশী সম্ভব!
: হ্যাঁ, করে দেখাবো
: সে কিভাবে?
: শাহবাগের মোড়ে দাঁড়াবো
: হুম হুম..
: তোমাকে ভালোবাসি প্ল্যাকার্ড লিখে
: পাগল!!! তুমি তা করবে?
: হ্যাঁ
: দুনিয়াকে জানিয়ে কী লাভ!
: ভালোবাসার শত্রু কমবে।
: তুমি একটা বদ্ধ পাগল!
: ভালোবাসো- ভালোবাসি একি সহজ কথা!
: আচ্ছা :)
: প্রথম সপ্তাহ প্ল্যাকার্ড...
: আরো আছে!
: দেখতে থাকো কতভাবে ভালোবাসি বলি... ;)
৭- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৭১ (আমার বিয়ে হয়ে যাবে, তুমি চেয়ে চেয়ে দেখো)

: অনু
: হুমম..
: কিছুতো বলো
: হুম
: মাথায় আকাশ ভাঙলো!
: নাহ্
: বিয়েটা কিন্তু জোর করেই দিবে
: হুম
: অনু! সে আমার চেয়ে একযুগ বড়!!
: মা'কে বলো
: মা'র মূল্য বাবার কাছে দু'টাকাও না!
: হুমম
: অনু, চাকরী'র কি হলো!

: এই জন্মে হবেনা হয়ত
: এজন্মে আমাকেও পাবেনা!
: চেষ্টা কি কম করছি বলো :(
: বুঝি.. কিন্তু কি পালায়ে খাবো কি?
: হুম..
: আমার বিয়ে হয়ে যাবে, তুমি চেয়ে চেয়ে দেখো
৯- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ – ৭২ (আব্দার তোর শাখের করাত)

: অনু!
: কি সোনা ;)
: কেন এত দস্যি তুই!
: ভালো লাগে, ভালো লাগাই ;)
: হুম হুমম..
: কেন বাধা দেস!
: ভালো লাগে, ভালো লাগাই ;)
: আচ্ছা আচ্ছা ;)
: সিক্রেট ফাস
: তুই লক্ষ সিক্রেটের ডিপু
: তোর আবিষ্কার?
: নিতি নিত্য নতুন সিক্রেটের ফাদ
: হি হি হি
: দূরে কেন?
: আঙ্গুল চেয়ে নেস্ আস্ত হাতের দখল!
: ভয় পাস্!
: তোর চেয়ে বেশী নিজেকে ☹
: হুম হুমম...
: আব্দার তোর শাখের করাত
: সে কেন!
: দিলে জ্বলি, না দিতে পারলে মরি ☹
:১০- ১১- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৭৩ (কষ্ট দিতে পারলে কি আর ভালোবাসি!)

: অনু
: হুমম
: আমারে আরো কষ্ট দে
: হে হে
: প্রতিদিন দেরী করে আস্
: এ্যাই প্রতিদিন দেরী করি!
: আরো অবহেলা দে
:
: শত জ্বালায় জ্বালিয়ে কর অঙ্গার
: এমন আমি ?
: অভিযোগ করছিনা কিন্তু!
: কথার গতিবিধি অনিশ্চিৎ (ভয়ে মাখা হাসি)
: তোর সপ্তীর কসম (সিরিয়াসলি)
: এ্যাই কি হলো আজ!
: টের পেয়েছি
: কিসের!
: ভালোবাসায় দুঃখতেই সুখের চেয়ে বেশী সুখ
: (চুপ)
: যদি..
: হুম.. যদি...
: যদি নিশ্চিত হই, বাধন ছিঁড়বেনা কভু।
: নিশ্চিত তুই?
: হ্যাঁ, দু'ধার থেকেই।
: তাই বলেই কি ভালবাসায় কষ্ট কিনবি?
: হুমম...
: তোরে কষ্ট দিতে পারলে কি আর ভালোবাসি!
১১- ১১- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৭৪ (তাই বারবার ফিরে আসবো, গুছিয়ে রাখতে তোরে)

: অনু, পারলাম না আর :(, ফিরে এলাম
: (অভিমান করে চুপ)
: একি অবস্থা তোর :(!
: ভাল
: ভাল (ভেঙচি কেটে)
: এগার দিন হলো মান করে দূরে :(
: হুমম
: সিগারেট খেয়েছিস্ এ ক'দিন?
: না
: চোখের দিকে চেয়ে (শাসন)
: না
: এ্যাই..চোখের দিকে চেয়ে
: হ্যাঁ
: ভেরী গুড, জানতাম
: (অপরাধীর মত চুপ)
: গরু, চিংড়ি খেয়েছিস্?
: হুমম
: এলার্জি!
: (চুপ)
: সব দিক দিয়েই তবে শাস্তি দিয়েছিস্ নিজেকে!
: (চুপ)
: রাগ করেছিলো কে?
: আমি
: যেতে বলেছিলো কে?
: আমি
: ফিরে আসলো কে?
: তুই
: কেন জানিস?
: (চুপ)
: আমি ছাড়া বড় অগুছালো তুই
: হুমম (আস্তে করে) :(
: তাই বারবার ফিরে আসি
: :)
: তাই বারবার ফিরে আসবো, গুছিয়ে রাখতে তোরে।

: (আমি জানি তুই আসবি)
: (তুই বুঝে গেছিস্ আমি যে আসবো)
১২- ১১- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৭৫ (ভুল করেছি কাছে এসে, প্রায়শ্চিত্ত করবো দূরে গিয়ে)

: :(
: !
: ভুল করলাম
: সিরিয়াস?
: হুম..
: কিভাবে?
: কাছে এসে
: (চুপ)
: ভালোবেসে
: আমি কি কখনো...!
: নাহ কখনোই ধরেননি, ধরা দেননি
: (চুপ)
: সচতুর ভাবে বাধ্য করেছেন ভালোবাসতে
: রেগে যাচ্ছো
: নাহ্ খেলনার রাগ থাকেনা
: তুমি খেলনা নও
: ছিলামনা, আপনি বানিয়েছেন
: তুমি ভালো, অনেক...
: তবে ভালোবাসেন্, বাসবেন!
: কি বলছো এসব?
: জানি, যা বলি তাতেই ফাঁসবো
: (চুপ)
: ফেঁদেছেন এমন ফাঁদ
: শান্ত হও
: ভুল করেছি কাছে এসে, দূরে গিয়ে প্রায়শ্চিত্ত করবো
: পারবে?
: পারবোনা, তবু সামনে আসবোনা কোনদিন:(
১৩- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৭৬ (নাহ্, ভূতের নামটি হলো ভালোবাসা)

: হ্যালো সপ্তী
: ওমম..
: চুল বেধেছিস্?
: ওঁনহু..
: কেন?

: অনু, তুই আমাকে অলস করেছিস
: সে কিভাবে!
: চুল বেধে, নখ কেটে, যত্ন করে
: নিজে তবে করতে নেই আর!
: হি হি হি না নেই
: পাগলী সাজবি?
: বড্ড লোভী আমি
: তাই বলে সন্ধাবেলা চুল বাধবিনা!
: যা করে দিস্, তা সারা জীবন তোর হাতেই ন্যাস্ত।
: পাগলী একটা!
: এ্যাই পাগলীটাকেইতো ভালোবাসিস
: :) হুমম..
: হি হি হি
: শুন, সন্ধাবেলা চুল না বাধলে ভূতে ধরে ;)
: ভূতেতো ধরেই আছে! (খুব সহজ করে)
: ওঝা ডাকবো?
: নাহ্, ওঝা আসলে বরং তাড়িয়ে মারবো
: সে কেন?
: হুঁম হুঁম..
: নাম কী ভূতের! কুন্তুশান্তু? (চাপা হাসি) :)
: নাহ্, ভূতের নামটি হলো ভালোবাসা। ;)

: (পাগলী আমার, এমন করে আর কারো প্রেমিকা কি বলতে পারে!)
: (বুদ্ধু, এত সরল ভাবে ভালো আর কারো প্রেমিক কি বাসতে পারে?)
১৩- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৭৭ (তোর কপালে লেখা ছিলাম, মুছবিনাতো?)

: অনু
: ওঁ...
: ওর কথা বল্
: কার কথা?
: যার সাথে আগে ভালোবাসা ছিলো
: শুনতেই হবে?
: বল্ না
: টিকে থাকলো না
: কেন?
: বাদ দে তো
: দিলাম
: ঘটনা কী জানিস?
: কী?
: তোর কপালে লেখাছিলাম, মুছবিনাতো?
: কপালের উপর বসালাম জীবন আমার
: মানে কি হলো?
: আগে জীবন ক্ষয় হবে, তার আগে তোর নাম নয়!
: ভালোইত বল্লি রে ;)
: ভালোবাসি, ভালো বলবোনা? ;) হি হি হি।
১৪- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৭৮ (কষ্ট দেওয়ার অধিকারইযে ভালোবাসা!)

: অনু
: হুমম.. বল্ সোনা
: আমার অষ্টপ্রহর নষ্ট করে দে
: ! (ভ্রু কুঞ্চিত)
: আষ্টেপিষ্টে নষ্ট হতে কষ্ট জাগে
: এ আবার কেমন কষ্ট!
: মন- গহীনে সুখ- সর্পের মরণ- ছোবল
: পাগলী হলি?
: আমি সপ্তী'কে তো পাগলী'ই ডাকিস!
: এ্যাই কি হলো আজ!
: জানিনা রে :(, ব্যাকুল মন আকূলি করে
: শুধু শুধু!
: নাহ্, তোর একটু সোহাগ পেতে
: ;)
: তোর দেয়া অত্যাচারের কষ্ট পেতে
: (চুপ)

: এ্যাই, অনু কি হলো তোর?
: মন- আকাশে মেঘের প্রকোপ :(
: পাগলী কারণ? ভয় পেয়েছিস্ ;)
: উঁহু...
: কষ্ট দিতে ইচ্ছা করে তোরে
: (চুপ)
: বিবেকহীন কষ্ট যত
: এতে মন খারাপের কী হলো!
: সপ্তী, যারে ভালোবাসি তারে কষ্ট কেন দিবো!
: বুদ্ধু, ঐ কষ্ট দেওয়ার অধিকারইযে ভালোবাসা!
১৫- ১১- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৭৯ (ভাস্কর্যের নাম "অনুসপ্তী")

: অনু
: হুমম
: অমর হবো
: হে হে হে.. হাতের মোয়া!
: মরে গেলে সবায় ভুলে যাবে!
: কারে?
: অনু- সপ্তীরে, আমাদের এই ভালবাসারে
: ভুলে যাওয়াই মানব- ধর্ম
: লাইলি- মজনু! কেউ ভুলেছে?
: আমরা কি আর...
: কমতি কোথায়?
: ভালোবাসাতো ভালোবাসাই, কমতি শুধু ক্যাম্পেইনিংএ
: চল ভালোবাসা প্রচারের প্রাচীর গড়ি
: সে কিভাবে!
: বেশী বেশী কবিতা লিখ্
: :)
: আমিতো তোর পাশেই আছি, প্রেরণার আকাশ
: জানি আমি ;), পাশেই আছিস্
: চল্ একটু খানি জায়গা কিনি
: কোথায সেটা?
: ওঁম... গোমতীর তীরে
: অলুয়া- ঘাটের কাছাকাছি?
: মত্ দিলি তবে :)?
: যোগল ভাবনায় স্বর্গ মোদের
: :)
: কী করবি সেখানে?
: ভালোবাসার ভাস্কর্য
: নাম কী হবে?
: ভাস্কর্যের নাম "অনুসপ্তী"
: :) হুমম হুমম
: আমার আঁকা, ফলক- কবিতা তোর
: :)
: নিত্য রবে দেশ- বিদেশের পর্যটকের ভীর
: কেন কেন?
: অনুসপ্তী! ভালোবাসার- ভাস্কর্য না?
: হুমম
: আসবে শত প্রেমিক- যোগল
: (চুপ)
: আসবে শত একলা প্রেমিক, বর চাইতে অন্যজনকে।
: :) হে হে হে
: কেউবা দিবে ফুল, কেউবা দিবে টাকা
: ওমা! টাকায় কি হবে?
: তহবিল, ঘর- পালানো প্রেমিকদেরকে সাহায্য করতে!
: চল্ দুজন মিলে স্বপ্নটাকে সফল করি
: হুম... ছড়িয়ে দিবো এ ভালোবাসা অসীম কালের প্রেমিক- যোগলে।
১৬- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৮০ (একটু খানি মরণ দিবি? সুখের মরণ?)

: সপ্তী, তুই কি ইলেক্ট্রিসিটি?
: কেন বল্ তো!

: কাছে আসলেই শিওরে ওঠি
: (চুপ)
: দেহে মনে কাঁপন লাগে, সুখের কাঁপন।

: অনু, তুই কি তবে প্রদিপ শিখা!
: কেন বল্ তো!
: জ্বলতে ইচ্ছা করে বক্ষে চেপে তোরে
: (চুপ)
: একটু খানি মরণ দিবি? সুখের মরণ?
১৬- ১১- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৮১ (একটা দিনের ঘর- পালানো সুখ)

: অনু
: ওঁমম..
: তোর ব্যাস্ততারে ফাঁকি দিবি?
: কেন বল্ তো?
: একটা দিনের ছুটি দে তোর সকল কাজে
: কি হবে তাতে?
: ব্রক্ষপুত্র দেখা হবে ;)
: ওমা! ঢাকার বাইরে?
: হুম হুম :) ময়মনসিংহ
: কী বলবি বাসায়?
: প্রেমের পরে, মিথ্যা বলায় পারদর্শী
: হে হে হে :)
: জানিস্, মিথ্যা বলাটাও শিল্প বটে ;)
: হুমম.. তো যাত্রা কবে?
: আজই, যাবো আসবো দিনেদিনে
: গুছানো সব ;)!
: হি হি হি হুম..ট্রেনের টিকেটও
: পাগলী একটা!
: ভালো লাগছে, কান্না পাচ্ছে, সুখের কান্না
: (চুপ)
: একটা দিনের ঘর- পালানোর সুখ ;) হি হি হি।
১৭- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৮২ (এতেই এত খুশি? আর কিছু কি চাইবিনা তবে? ;))

: অনু
: হুমম...
: ব্যাস্ত বেশী?
: হুমম
: খেয়েছিস্?
: না
: চার'টা বাজে!
: কাজের চাপ
: আমার কিন্তু ঔষধ খেতে হয় :(
: খেয়ে নে তুই! খাসনি এখনো?
: তোর আগে খাই কখনো!
: সপ্তী আমার, সোনা আমার খেয়ে নে
: কত কঠিন আমি, জানিস্ তুই :(
: এই ব্যাপারটাই ভালো লাগে
: কোন্ টা? :)
: খোঁজ খবর, জোর জবস্তি।
: রাগও তো করিস্
: খুশিওতো হই ;) আচ্ছা এই সুখইকি ভালোবাসা?
: এতেই এত খুশি? আর কিছু কি চাইবিনা তবে? ;) হি হি হি।
: ভালোই জানিস্, আব্দার আমার বাধন মানে ;) হে হে হে।
১৮- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৮৩ (শাড়ীখানা করবে আমার ইচ্ছাপূরণ ;))

: হঠাৎ করে শাড়ী কেন?
: ;) (মুচকি হাসি)
: হাসিটা যেন..ওমম.. অন্যরকম (দুষ্টমি হাসি)
: হুমম :), হে হে
: হে হে মার্কা তোর অসহ্য হাসি, ওফ্..
: হে হে হে হে ... :)
: বল্ হঠাৎ করে শাড়ী কেন দিলি?
: এমনি
: বার মাস্ তো টানাটানি, গরিব- প্রেমিক আমার :)
: গরিব বলে কি গিফট দিবো না :(?
: অনু! রাগ করলে মানায় তোরে? আজিব!!
: :) , শাড়ী দিলাম করতে সীমা- লংঘন।
: ওমা! সে কিভাবে?
: অধিকার আমার হাত ধরাতেই সীমাবদ্ধ
: (চুপ)
: আমার দেয়া শাড়ীখানা করবে আমার ইচ্ছাপূরণ ;)
: কি ইচ্ছা ;) (দুষ্ট- হাসি)
: জড়িয়ে রাখবে তোরে আষ্টেপিষ্টে :)
১৮- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৮৪(অপরাধী কর, কয়েদী কর সাত- জীবনের)

: সপ্তী
: হুমম..
: খুন করবো
: সে তো তুই করিস্!
: কবে, কারে!
: হরহামেশাই, এই আমারে :(
: কিভাবে?
: রাগে, অবহেলায়, পাষাণ কষ্টে

: সপ্তী, লুট করবো
: লুটতরাজের রাজা যে তুই!
: কিভাবে?
: ঘুম লুটেছিস, ভাবনা লুটিস, আরো কত...
: (চুপ)

: অনু, আসামী সাজার সাধ কেন এত?
: যাবজ্জীবন কারাদন্ড চাই, ব্যাবস্থা কর
: পারবো আমি!
: কারাগার তোর মন- কারাগার
: হুম হুম :)
: অপরাধী কর, কয়েদী কর সাত- জীবনের।
১৯- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৮৫ (তুই কি কোলবালিশের মত শান্ত সুবোধ! ;))

: সপ্তী!
: আবার কী? ;) (দুষ্টমিতে ভ্রু- কুঞ্চিত)
: হিংসা হয়
: আবার কারে!
: দেয়াল জুড়ে তোর ঐ আয়নাকে
: হি হি হি ভালোবাসার ডায়লগ বলবি? ;)
: :((চুপ)
: হি হি হি রাগ? বল্ সোনা বল্..
: আয়নাটা করে তোরে বক্ষে ধারণ
: ওঁমম... তাইতো! তুই অনেক জ্ঞানী ;)
: সপ্তী, আয়না হবো
: কি! যে সামনে তারই ছবি বক্ষে ধরবি!
: এমনটাতো ভেবে দেখিনি :(
: বুদ্ধু কাঁহিকা ;) (চাপা হাসি)

: সপ্তী, তোর ঐ কোলবালিশটাকে বেশী হিংসা হয়
: বল্ কোলবালিশ হবি! (আদুরে শাষন)
: :) হুমম. তোর ঐ কোলবালিশ হবো, একান্ত তোর
: এঁহ.. তুই কি কোলবালিশের মত শান্ত সুবোধ! ;) হি হি হি
: শান্ত সুবোধ হই এমনটাই চাস? ;)
: (চুপ)
: হে হে হে...
২০- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৮৬ (কেন হলাম না তেলাপোকা, নিদেনপক্ষে ছারপোকা)

: সপ্তী, দেখেছিস্ তেলাপোকার ক্ষমতা কত!
: সে কিভাবে!
: ওড়ে এসে তোর গায়ে পড়লো
: হুম হুম ;) (চাপা হাসি)
: নিমেষেই খুলে ফেল্লি তোর অর্ধেক শাড়ী :)
: অসভ্য (লায় দেওয়া শাসন)
: আর আমার প্রাপ্তি শূন্যের কোঠায় :(

: সপ্তী, ছারপোকাটার ভাগ্যও বটে ;) (চাপা হাসি)
: কোন্ ছারপোকা! (চিন্তিত)
: ঐযে ঐ দিন সিনেমা হলে, ঢুকে গেলো তোর জামার ভিতর
: ওমা! সে কি কান্ড, হৈ হুল্লোর
: কেন হলাম না তেলাপোকা, নিদেনপক্ষে ছারপোকা।

: (অনু, এত সুন্দর করে কি কেউ কথা বলতে পারে!)
: (সপ্তী, লজ্জা পেয়ে এত সুন্দর করে কেউ কি হাসতে পারে!)
২১-১১-০৮, ঢাকা

৮৭ (চুরি করে দেখার মত অনেক কিছুই আছে ;))

: অনু!
: হুমম.. (মহা ব্যাস্ত ভাব)
: কী দেখছিস আমার মধ্যে?
: হুমম... (দেখছে ও চিন্তা করছে)
: এ্যাই অনু! তোর দৃষ্টি আগে এমন ছিলোনা
: কেমন ছিলো?
: বড্ড ভদ্র, সুইট কিউট
: আর এখন?
: ভদ্রভাবে অসভ্যতম ;) (চাপা হাসি)
: তোর দেহটা নিয়েইতো তোর অস্তিত্ব?
: হ্যা!
: খুঁজছি তবে কোথায় তবে প্রেমের চুম্বক, এত টানে!
: দেহের মধ্যে প্রাণ কোথায় তা বলতে পারিস?
: হুমম.. না তো!
: প্রেমতো আরো জটিল ব্যাপার
: সে কেন?
: প্রেম কি শুধু দেহে থাকে!
: আবার কোথায়?
: কিছু দেহে, কিছু কথায় বার্তায় কিছুবা কাজে।
: হুমম.. তাইতো!
: আচ্ছা অনু, মেয়ে দেখলে কেন তোদের চোখ ফিরেনা?
: (চুপ)
: কি'বা দেখিস যে এত খুশি, চুরি করে নজর ঘুরাস!
: সেই তো, চুরি করে দেখার মত কিইবা আছে (কনফিডেন্টলি)
: কনফিডেন্টলি?
: হ্যাঁ মোটামোটি
: ঠিক আছে, কাছে আয়, আরো কাছে
: কেন?
: চেয়ে থাক্ আমার মুখের দিকে, হ্যাঁ এমন করে
: (সপ্তী, এত সুন্দর কেন তুই? গঠনটা কি হেমামালিনীর মত কিছুটা!)
: এ্যাই, এ্যাই দৃষ্টি মুখ থেকে সরে কোথায় গেল! ;)
: নাহ আছে
: কী আছে?
: চুরি করে দেখার মত অনেক কিছুই আছে ;), হে হে হে
: অসভ্য।
২২-১১-০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৮৮ (ফুল কি ভ্রমরকে বাধা দেয়)

: তুই ফুল না ভ্রমরা?
: আমি সপ্তী
: দুষ্টামি রাখ, বল্ না (আগ্রহ)
: বলবো না
: কেন? :(
: তুই বড় অসভ্য
: রূপক অর্থে, বল্ না :(...
: ফুল
: আমি?
: অনু
: রূপক অর্থে!
: ভ্রমরা
: ঐ দেখ ভ্রমর টা ফুলের ...
: (চুপ)
: ফুল কি ভ্রমরকে বাধা দেয়! তুই তবে কেন...
: এ্যাই চুপ... (আদুরে শাসন)
: হে হে হে হে.. :)
২৩-১১-০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৮৯ (আমি যেন তোর কুড়িয়ে পাওয়া কেউ ☹)

: অনু
: (চুপ)
: ভ্রু এর দেখি অবস্থানচ্যুতি!
: (চুপ)
: মুখটা অমন ভোঁতা কেন?
: এমনি :((কঠিন, মন খারাপ)
: (চুপ)
: সপ্তী, তোর মোবাইল আজকাল কেবলই বিজি
: ও এই কারণে? বন্ধু- বান্ধব কথা বলে
: রাত- বিরাতে!
: মুখের উপর রেখে দেওয়া যায়!
: সবার সাথে কেন এত হাসাহাসি?
: অনু! সে আমার কাজিন লাগে!
: (চুপ)
: (চুপ)
: আমি যেন তোর কুড়িয়ে পাওয়া কেউ ☹
: অনু, সারাক্ষণ কেন সন্দেহতে ঘিরে রাখিস!
: কেন এ কি অসহ্য লাগে?
: (চুপ)
: আমাকে ও?
: কেমন কথা!
: আমি এমনই
: (চুপ)!
: যাই
: !
২৪-১১-০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৯০ (আচ্ছা যা, রাখবো তোর ঐ আব্দারটাও ;) খুশি এবার?)

: জোর করছিস্!
: অধিকার নেই?
: অপপ্রয়োগ বলেও একটি কথা আছে
: (চুপ)
: অনু, কেন আমরা ঝগড়া করছি?
: (চুপ)
: জানিই যখন, দু'জন দু'জনার!
: (চুপ)
: কথা বল, ওমা, হাত ছাড়লি যে!
: এমনি :(
: হাত ছাড়লে কিন্তু জড়ায়ে ধরবো ;)
: এই পথের ধারে!
: তো?
: পাগলী হলি?
: পাগলীইতো ডাকিস্ :)
: (চুপ)
: আচ্ছা যা, ফোন আর বিজি রাখবোনা
: (চুপ)
: হেসে হেসে কথা বলবোনা তুই ছাড়া অন্যজনে
: (চুপ)

: কথা বল, অনু আমার, জামাই আমার...
: (চুপ)
: আচ্ছা যা, রাখবো তোর ঐ আব্দারটাও ;) খুশি এবার?
২৫- ১১- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৯১ (জ্বালিয়ে দেস্, তবু টানি বুকের ভিতর)

: অনু, তুই আমার কাঁথা
: হুমম, গরম এর দিন এর :(
: নাহ্ সোনা, বৃষ্টি এবং হালকা শীতে
: ঐ মুখে মুখেই :(
: আহালে থোত বাবুতালে... ;)

: সপ্তী, তুই আমার সিগারেট
: কী!
: নেশা আমার।
: (চুপ)
: জ্বালিয়ে দেস্, তবু টানি বুকের ভিতর।
২৫- ১১- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৯২ (সরে এলাম, নিজের ব্যাক্তিত্ব ক্ষয়ে যাওয়ার আগে)

: আজ তার সাথে দেখা হলো :(
: কথা হলো!
: নাহ্ সে সম্পর্ক কি আর আছে?
: হুমম...
: (চুপ)
: চমকে ওঠলো?
: ক্ষণেক, দু'জনেই
: কি করলি?
: মাথা নত করে দেখলাম এ হাত
: কেন?
: এ হাতে একদিন ছিলো ঐ হাত :(
: হুমম
: দু' হাত দিয়ে চেপে ধরলাম এ মুখ
: (চুপ)
: পাছে স্মৃতিচিহ্নরা কথা কয়ে বসে:(
: (দীর্ঘশ্বাস)
: ঘুরিয়ে নিলাম মুখ
: ঘৃণায়?
: জানিনা, চোখের জল মানলোনা শাসন :(
: (চুপ)
: হয়ত ভিজিয়ে দিলো অতীত- স্মৃতি
: ধুয়ে গেল?
: নাহ, এ যেন বৃষ্টি শেষে সতেজ তৃণদল
: কি করলি শেষে?
: সরে এলাম, নিজের ব্যাক্তিত্ব ক্ষয়ে যাওয়ার আগে।
২৬- ১১- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৯৩ (যে আগুন পুড়ায়, তার স্ফুলিংগে সৌন্দর্য্যও থাকে)

: হ্যালো, অনু
: সপ্তী! এত রাতে!!
: দুঃস্বপ্ন :(
: ধেৎ, স্বপ্নতো স্বপ্নই হয়
: যে স্বপ্নে তুই পাশে নেই?
: (চুপ)
: কেন দেখলাম?
: খুশি ছিলি?
: অপরিচিত কেউ, পাশে আমি বউ
: (চুপ)
: হাসছি খেলছি, কেন!
: যে আগুন পুড়ায়, তার স্ফুলিংগে সৌন্দর্য্যও থাকে
: মানে কি?
: তোর সুখেই খুঁজবো স্ফুলিংগের মত সুখ
: অনু!
: হুমম
: তুই তো এমন না!
: তবে?
: জোর করবিনা? কেন যেতে দিবি? বাঁচবো তাহলে?
২৬- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৯৪ (ও ;), তুই তাহলে কিছু মনে করিসনি :))

: অনু, কি হচ্ছে! (চাপা স্বরে)
: (ব্যাস্ত)
: এ্যাই X(
: হুমম (ব্যাস্ত)
: আবার! এ্যাই...
: (চুপ)
: রিক্সাওয়ালা কী মনে করবে?
: ও ;), তুই তাহলে কিছু মনে করিসনি B-)
: :) (চুপ)
: ;) হে হে হে :P
২৭- ১১- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৯৫ (ডুবে মরছি, তৃষ্ণা মিটছে কই? :P)

: অনু, তোরে আমি তীরন্দাজ বলি
: কেন বল্ তো!
: সাত মহলায় লুকিয়ে রেখেছিলাম মন
: হুম হুম...
: ঠিকই ঘায়েল করলি, এফোড়ওফোড় :(।

: সপ্তী, তোরে আমি সাগর বলি
: কেন কেন!
: ডুবে মরছি, তৃষ্ণা মিটছে কই? :P
: :-/, অসভ্য (খিক্ খিক্ খিক্)
: (বুচ্ছস্ তাহলে!, ভাবছিলাম বুঝবিনা)
২৭- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৯৬ (তোর কথা মানেই আমার শব্দ- মুক্তা- হার :))

: :(
: অনু, কি হলো?
: সপ্তী, আমি কি বেশি খারাপ :(!
: কেন বল্ তো!
: তোর সাথে বলি যত আবোলতাবোল...
: তোর কথা মানেই আমার শব্দ- মুক্তা- হার :)
: বাজে কথাও? :)
: অমন করে কেউ বলতে পারে! ;)
: আচ্ছা আচ্ছা B-) (খুব খুশি)
: দেখ্ আবার মাথায় ওঠবিনাতো!
: (চুপ)
: কি হলো?
: আজ কি রঙ এর জামা পরেছিস?
: এ্যাই.... অসভ্য (শাসন)
: ওমা কী বল্লাম? /#)

: (এখনো বলিস নাই, কিন্তু ...)
: (হে হে হে :))
২৮- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৯৭ (তোর হাতের কনুই না ধরে পথ চলতে পারি না)

: অনু, সবেতো তুই সাড়ে পাঁচ ফুট
: তো :(!
: কেমন করে গড়ে দিলি আমার ভুবন
: (চুপ)
: কিভাবে রাঙ্গালি আকাশ আমার!
: (চুপ)
: অনু, ভালোবাসলে কি মেয়েরা দূর্বল হয়!
: কেন?
: আমি দুর্বল, অনেক অনেক দুর্বল হয়ে গেছি
: (চুপ)
: তোর হাতের কনুই না ধরে পথ চলতে পারি না
: এ্যাই কি হলো তোর আজ?

: তোর জন্য সবকিছু ছাড়তে পারার আত্মবিশ্বাস পেলাম
: আমিও কি না!
২৯- ১১- ০৮, ঢাকা।

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৯৮ (না মানে ইয়ে, উল্টো হলে ভালো হতে :))

: সপ্তী, উল্টা চলে জীবনের পথ
: সে কেমন?
: ঘুরে বেড়াতে, শপিং করতে ইচ্ছা করে
: হুম হুম..
: কিন্তু দু'জনারই পথ শাসনে বাধা, হাতও খালি
: :) হুমম.. (চাপা হাসি)
: বয়সকালে বেতন বৃদ্ধি, নেই শাসন সবার
: হুমম.. আসলেও :(

: এইযে এখন সাঝ হলো
: হ্যাঁ ঘরে ফেড়ার তাড়া
: হুমম তুই তোর ঘরে, আমি আমার :(
: (চুপ)
: সাঝের শেষে আলাদা ঘরে ফিড়তে কি ইচ্ছা করে? :(
: আহালে থোনা বাবুতালে... (হিহিহি)
: অথচ যখন বয়সকালে ঝগড়া হবে
: ;)
: থাকবেনা জায়গা যাবার :(, একই ঘরে পরবাসী
: ঝগড়া হবে!
: ওমা! বৃদ্ধদের বেঁচে থাকার ঐ একটাইতো অবলম্বন ;)
: হিহিহি

: এই যে এখন, কাছে টানার আকুলতা
: (চুপ)
: এর চেয়ে ভয়টা বেশী, ভয়এরই জয় :(
: এ্যাই... (শাসন)
: না মানে ইয়ে, উল্টো হলে ভালো হতে :)
১- ১২- ০৮, ঢাকা

সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ৯৯ (হয়ত আমি তেমন কেউ নই :(, বাই)

: সপ্তী, রাগ করলাম, বুঝতেই পারলিনা :(
: করেছিলি নাকি?
: ধারণা ছিলো, আমাকে বুঝিস আমার চেয়ে বেশী
: ভেঙ্গেছে!
: দিনেদিনে রূঢ় হয়ে যাচ্ছিস
: অনু, তোর কম্প্লেক্সিটি বাড়ছে
: আজ শাড়ী পড়েছিলি বাসায়
: হুমম সাতটায় আসবি বলে নয়টায়ও দেখা নেই
: জামজট পার হয়ে যখন দড়জায়
: (চুপ)
: ফোনে বল্লি খুলে ফেলেছিস্ :(, ফিরে এলাম।
: আমি দু'ঘন্টা অপেক্ষা করেছি
: তোর অপেক্ষা ঘড়ি ধরে! আমিতো করি আজীবন
: তবে কি বলছিস্ ভালোবাসায় কমতি আমার!
: নাহ্ আমিই বরং অহর্নিশী ভালবাসি :(
: এ তোর বারাবারি
: আর করবোনা :(
: মানে কি?
: ভালোবেসে একদিন নাম দিয়েছিলাম সপ্তী
: (চুপ)
: সাত থেকে সপ্ত, সপ্ত থেকে সপ্তী
: (চুপ)
: মেয়েদের ছয়টা সেন্স এট এ টাইম কাজ করে
: হুম.. আমার একটা বেশি, তাই আমি সপ্তী
: (চুপ)
: আমি বয়ে বেড়াচ্ছি আমার এ নাম মনেমনে
: আর বয়ে বেড়াতে হবে না :(, মুক্ত করে দিলাম
: (চুপ)
: একটা অতিরিক্ত সেন্স নিয়েও ইদানিং..
: (চুপ)
: বড় অবহেলা হানছিস পাষাণের মত
: অনু!
: ভালোবাসায় অবহেলিত হওয়া মানে শত মরণ :(
: আমার কিছু করার নাই অনু :(
: হয়ত আমি তেমন কেউ নই :(, বাই।

: (চুপ)
: (চুপ)
১- ১২- ০৮, ঢাকা।

(শেষ)   সংক্ষিপ্ত সংলাপ - ১০০(()

: (ফোন দে অনু, ফিরে আয়)
: (সপ্তী, জানিস জন্ম- অভিমানী আমি)
: ("যাই" বলে নিজেই গেলি)
: (দূরে সরে গেছিস :()
: ("যাই" কথাটা মুখে এলো!)
: (তিন দিন হলো :()
: (প্রায় চার দিন :(, ফিরে আয়)
: (তারমানে আমাকে আর চাস্ না, জোর করে পাশে দাড়াবো না :()
: (তারমানে আর ফিরবিনা :()
২- ১২- ০৮, ঢাকা।